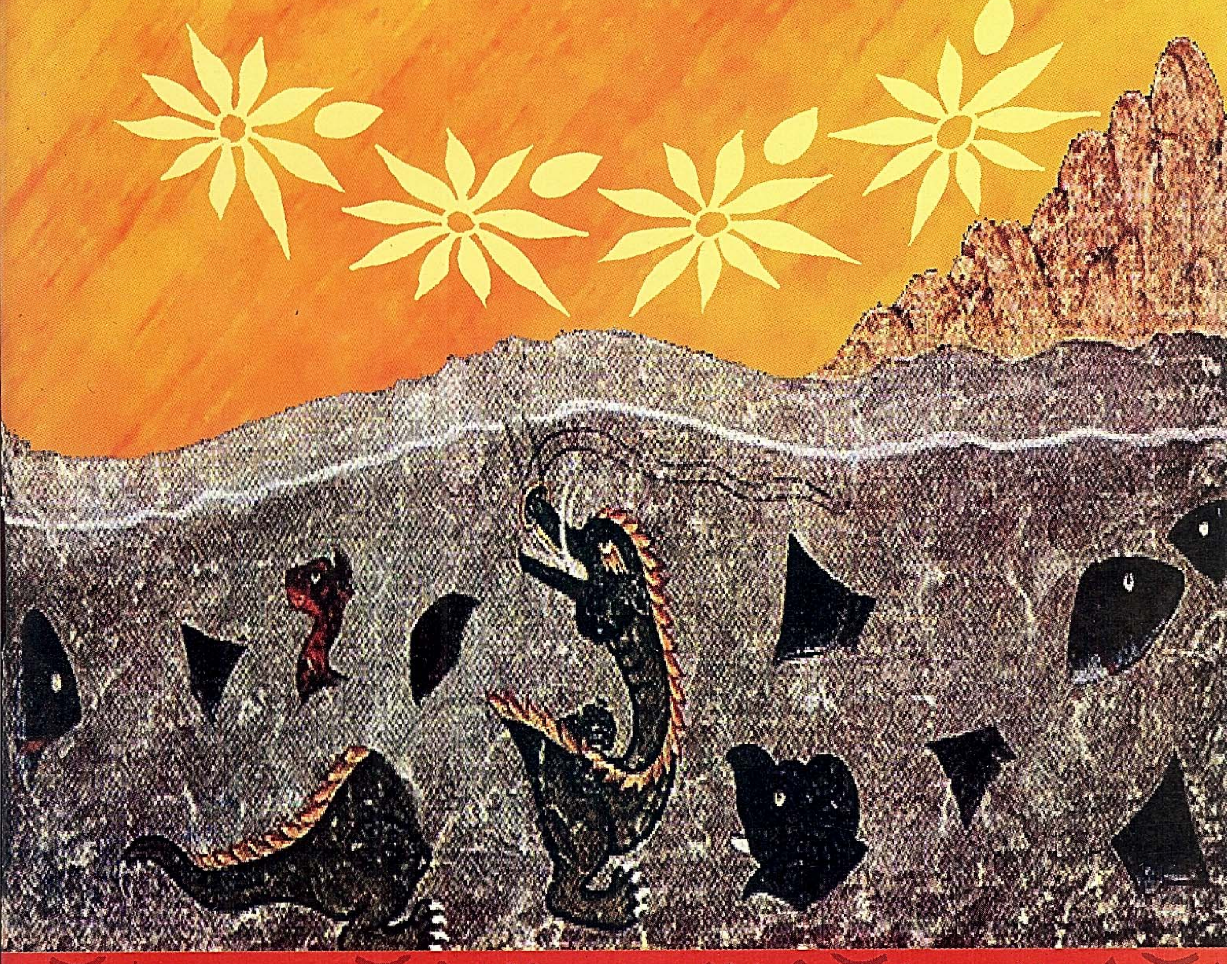
मुण्डारी गीतकार

श्री बुदु बाबू और उनकी रचनाएँ

प्रीतपाला और रामायणपाला



अनुवादक-सम्पादक

रामदयाल मुण्डा

मुण्डारी गीतकार
श्री बुदु बाबू और उनकी रचनाएँ
प्रीतपाला और रामायणपाला

अनुवादक–सम्पादक

रामदयाल मुण्डा

प्रकाशक

मुण्डारी भाषा साहित्य परिषद्

सरना टोली, राँची कॉलेज के पीछे

राँची–834008 (झारखण्ड)

मुण्डारी गीतकार

श्री बुदु बाबू और उनकी रचनाएँ
प्रीतपाला और रामायणपाला

प्रकाशक : मुण्डारी भाषा साहित्य परिषद्
सरना टोली, राँची कॉलेज के पीछे
राँची–834008 (झारखण्ड)

प्रथम संस्करण : 1978

द्वितीय संस्करण : 2013

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, कोकर, राँची–834001
मो. 094311 82812

मूल्य : 40/– रूपये

अनुक्रम

रामायण पाला रेआः दुराङ को	**रामायण पाला के गीत**	**पृष्ट**

भूमिका

भारतीय दर्शन में देशोपासना के लिए ज्ञान और भक्ति, परस्पर परिपूरक दो विशिष्ट मार्गों की परंपरा है। उपनिषद् साहित्य ने जिस ब्रह्म को ज्ञानमार्ग द्वारा समझाने का प्रयास किया है पौराणिक साहित्य ने जिस भक्तिमार्ग द्वारा आगे बाढ़ाया है। भक्तिसाहित्य के निर्माण में भागवत पुराण का योग सम्भवत: स्र्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। पूरबी भारत में भागवत पुरान उल्लिखित कृष्णकथा हो आगे चलकर जयदेव (10वीं शताब्दी) प्रभृत संस्कृत कवियों द्वारा भक्तिशृंगार मिश्रित गीतों में दुहराई जाती है। वही कथा मध्ययुगीन विद्यापति और चण्डीदास के गीतों का आधार बनती है। 17वीं शताब्दी के संत श्री चैतन्य अपनी पूरी-बृंदावन की भक्तिगीत यात्राओं द्वारा इन गीतों को और भी विस्तृत करते हैं। बिहार के पूरबी जिलों में, जिधर से होकर श्रीचैतन्य ने पदयात्रा की थी, भक्तिशृंगार के गीतों की परपरा के पीछे इसी विशाल भारतीय भक्ति आन्दोलन का एक छोटा रूप देखा जा सकता है।

राँची जिले का पांचपरगना-तमाड़, बुण्डू, राहे, सोनाहातु, सिल्ली इलाका जिले का सबसे समतल और उपजाऊ इलाका है। यह झारखण्ड प्रदेश और बगाल को भौतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से मिलाता है। नागपुरी भाषा यहीं बंगला के प्रभाव में आने के कारण पंचपरगनियाँ कही जाती है। इसी कारण यहाँ के साहित्य में भी बंगला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधार हैं किन्तु वाह्य प्रभावों से इनका ऊपरी रूप किंचित अलग हो गया है। यहाँ हमें आदिवासी और अभिजात्य साहित्य के मिश्रण का एक सुन्दर उदाहरण मिलता है।

इसी पचपरगना इलाके में तमाड़ से दो मील पूरब में बवैकुण्डी एक गांव है जहाँ पिछली (19वीं) शताब्दी के प्रथम दशक के आस-पास श्री बुधनाथ शिखर का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम श्री गौर शिखर था। कहते हैं कि शिखर परिवार तमाड़ राजपरिवार का बसाया हुआ है। तमाड़ के तत्कालीन राजा श्री उपेन्द्रनाथ शाहदेव एक अच्छे कला प्रेमी थे। शिखर परिवार को उन्होंने एक छोटी सी जागीर देकर बवैकुण्डी गांव में बसाया। श्री गौर शिखर दरवारी गायक थे। इनके पुत्र बुधनाथ को गीत संगीत की विरासत अपने पिता से ही मिली। श्री बुधनाथ ने प्रारंभ में पंचपरगना-बंगला और पचपरगनियाँ नागपुरी में ही गीत लिखे, और एक अच्छे गीतकार के रूप में उन्हें तत्कालीन राहे निवासी कवि विनंदसिंह के समकक्ष रखा जा सकता है, किन्तु उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएं-प्रीतपाला और रामायणपाला मुण्डारी में ही लिखीं। मुण्डारी

गांव में पलने के कारण उनका मुण्डारी जानना स्वाभाविक ही था। परिणामत: मुण्डारी सांस्कृतिक भूमिका में इन गीतों का अपूर्व स्वागत हुआ और इसी के साथ बुधनाथ शिखर बुदु बाबू बन गए और सारे मुण्डारी इलाके में छा गए।

कला सृजन के लिए सारी आवश्यक सामग्री पहले से ही वातावरण में वर्तमान थी। बुदुबाबू ने उसे मात्र एक नई दिशा दी। भागवतोल्लिखित गोपी कृष्ण प्रेम को आदिवासी जीवन के समीप लाकर उन्होंने गीत रचना में एक नया प्रयोग किया है। इस प्रयोग के सफलीभूत होने में बुदुबाबू के तत्कालीन मित्रों-हरि, कालीप्रसाद, और धनंजय का सबसे बड़ा हाथ था। ये बुदुबाबू के ही सहग्रामवासी थे और उनकी पत्नी हड़द् की नृत्यकार जोड़ो, सदामनि जैसे सहनाई वादक और भवानी जैसे ढोल वादक का भी योग था। इन सारे कलाकारों ने बुदु बाबू के गीतों को एक जीवंत रूप दिया।

कलाकार मित्रों की मण्डली में रहते-रहते नाच और गान बुदु बाबू के जीवन के अंग हो गए और गीत बनाना उनके वार्तालाप करने का एक विशिष्ट ढंग ही हो गया। उनके अंतिम दिनों तक आते-आते लोगों को विश्वास हो गया था कि वे गीतों के एक जादुगर ही थे। कहते हैं कि एक बार बुदु बाबू अपने साथियों के साथ पड़ोस के एक गांव में नाचने गए हुए थे। उसी गांव में किसी व्यक्ति को एक सांप ने काट दिया। जब बुदु बाबू को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने तत्क्षण मनसा (सर्पदेवी) की बंदना में एक गीत रचा और सांप काटे हुए व्यक्ति को लक्ष्य करके गाया। उनका ऐसा करना था कि सांप का विष उतर गया और वह आदमी भी उनके साथ नाच में सम्मिलित हो गया।

बुदु बाबू (और उनके मित्रों) के गीतों को देखकर साफ पता चलता है कि उनके गाँव (तथा आस-पास के इलाकों) में रामायण, महाभारत और भागवत पुराण का पाठ होता था। इन ग्रंथों के संस्करण बंगीय थे— जैसा कि उनके गीतों के छन्द और बिंब विधान से पता चलता है। किन्तु बुदु बाबू की रुचि रामकथा और कृष्णकथा की यथापूर्व पुनरावृति में नहीं थी। उन्होंने जनमानस की दो मूलभूत मनोवृत्तियों– प्रेम और उत्साह को ध्यान में रखकर ही भागवत पुराण से राधाकृष्ण के प्रेम और रामायण से राम लक्ष्मण की लंका विजय संदर्भ को अपने गीतों का विषय बनाया है। बुदु बाबू सरसता के कवि थे– उन्होंने अपने गीतों को दार्शनिक दांव-पेंच से यथाशक्ति दूर ही रखा।

प्रस्तुत गीतों को समझने के लिए हमें यहाँ बहुत कहने की आवश्यकता नहीं होगी। प्रीतपाला का संबंध राधाकृष्ण के प्रेम से है जिसमें नायक और नायिका के

चरित्र का विकास एक क्रमिक रूप में किया गया है। धूल में खेलने और गाय चराने के साथ कृष्ण का रचित्र उद्वाटित होता है और गोपियों के साथ रासलीला, उनके मथुरागमन तथा पुनर्मिलन के साथ उस चरित्र में परिपूर्णता आती है। प्रेम व्यापार की तीन अवस्थाओं उत्कंठा, मिलन और विरह का चित्रण बुदु बाबू ने बड़े ही प्रभावोत्पादक ढंग से किया है। एक बात द्रष्टव्य है कि बुदु बाबू के कृष्ण-राधा को फिर से मिलते हैं। वे भागवत के निर्दयी कृष्ण नहीं बनते जो स्वयं गोपियों से मिलने के बदले उद्धव को उनके यहाँ ब्रह्म विद्या का सिद्धान्त प्रचार करने के लिए भेजते हैं। बुदु बाबू की प्रीतपाला में बिरह गीतों की बहुलता के बावजूद उसकी समाप्ति मिलन गीतों के स्वर से होती है। एक प्रकार से पुनर्मिलन के गीतों तक आकार ही विरह गीतों की प्रेमजनित तीब्रता का स्खलन होता है। स्पष्ट है कि बुदु बाबू प्रेम की ऊँचाई विरह में तनी हुई मानसिक स्थिति में नहीं वरन् मिलन में बंधी हुई संतोषावस्था में देखते हैं।

यदि प्रीतपाल प्रेम काव्य है तो रामायणपाला वीर काव्य। बुदु बाबू ने रामपाला की कथा रामायण के युद्ध खण्ड से ली है। संक्षेप में यह श्री राम-लक्ष्मण की वारन सेना के साथ लंका की विजय यात्रा का वर्णन है। लंका विजय के आधार राम-लक्ष्मण ही हैं लेकिन उत्साह और वीरता का जो चित्र बुदु बाबू ने हमें दिया है वह वानर चरित्रों, विशेषकर हनुमान, के माध्यम से ही उभरता है। पुल निर्माण में वानर वीरों का एक दूसरे से स्पर्धा, लंकेश्वर रावण की शक्ति का आंकलन, राक्षसों की परेशानी, मंदोदरी की भयावह बल प्रार्थना और रावण की अन्तिम हार के पीछे वानर ही अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं। मात्र एक गीत में— जिसमें राम-लक्ष्मण शिव की बंदना कर रहे हैं— वानर चरित्रों की उपस्थिति का अभाव है। वानरों में भी बुदु बाबू ने हनुमान और अंगद का चरित्र बड़े ही जाज्वल्यमान रूप से चित्रित किया है।

दोनों ही काव्य ग्रंथों की रचना कवि ने स्थानीय सांस्कृतिक भूमिका में की है। प्रीतपाला के कृष्ण, राधा और अन्य गोपियाँ आदिवासी समाज के युवक-युवतियों के प्रतिनिधि हैं। आदिवासी समाज के अपेक्षाकृत स्वच्छन्द प्रेम व्यापार को ही जैसे बुदु बाबू ने भागवत पुराण की आड़ में चित्रित किया है। उसी तरह लंका विजय के लिए निकला हुआ वानर दल, और कोई नहीं, कर्म और संघर्षशील आदिवासी समाज ही है। बुदु बाबू ने स्वयं उन चरित्रों का जीवन जीकर उनका चित्रण किया है। इसीलिए ये गीत इतने प्रभावशाली हो सके हैं। गीतों के चरित्रों और कवि में हम जिस तादात्म्य की बात कर रहे हैं वह गीतों के मनितापदों से ही स्पष्ट दिखाई देता है।

हर कवि भाषा के साथ कुछ न कुछ प्रयोग करता है। बुदु बाबू के साथ भी यह बात लागू होती है। गीतों की भाषा मुण्डारी हैं किन्तु छन्द बंगला के हैं। इसलिए कहीं–कहीं स्थानान्तरण की विचित्रताएँ आ गई हैं जो कविता की भाषा में स्वाभाविक है। कविता की भाषा अपने आप में गद्य की भाषा से कुछ अलग होती है। परंपरागत मुण्डारी गीतों की भाषा भी बोल–चाल की भाषा में कुछ अलग ही है जिनकी चर्चा हमने अन्यत्र की है। काव्यगत विशेषताओं को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत गीतों में व्याकरण संबंधी असंगतताओं के साथ न्याय किया जाना चाहिए।

इन गीतों का अधिकांश गुरुवर श्री जगदीश त्रिगुणायत द्वारा सम्पादित ''बांसुरी बज रही है'' (1957) और माननीय विशप श्री दिलबर हंस द्वारा सम्पादित मुण्डा दुरङ (1942) में किंचित अन्य रूपों में प्रकाशित हो चुका है। परंपरागत गीतों से बुदु बाबू के गीतों को एक स्वतंत्र रूप देना और एक क्रमिक रूप में प्रस्तुत करना ही हमारा उद्देश्य है। हमने कोई नई व्याख्या करने का दावा नहीं किया है। इतना अवश्य है कि गीतों के अनुवाद में अपने पूर्ववर्ती विद्वानों के अनुभवों से लाभ उठाकर हमने कई बातें अधिक स्पष्ट करने की कोशिश की है। ऐसा भी हो सकता है कि स्पष्ट करने के चक्कर में कुछ बातें घपले में पड़ गई हों। फिर भी बुदु बाबू के गीतों को लेकर बाल की खाल निकालने वाले किसी विद्वान् के अवतार लेने के पहले हम इतने से ही संतोष करते हैं।

इस पुस्तक को वर्तमान रूप देने में मेरे सहयोगियों में सर्वश्री उषा, सुनंदा, रानी, मदिराय, रोलेना और गंदुरा जी ने विशेष सहायता दी है। वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। नॉवल्टी आर्ट प्रेस के प्रबन्धक श्री महेन्द्र सिंह की तत्परता से ही यह पुस्तक प्रकाश में आ रही है। गीतों के मर्मज्ञ, मेरे पिताजी को खुश करना बड़ा कठिन है फिर भी उनका आशीर्वाद तो हमें किसी न किसी रूप में लेना ही है।

—मिनिसोटा विश्वविद्यालय
संयुक्त राज्य अमेरिका।

— रामदयाल मुण्डा

****

प्रीतपाला के गीत

****

1. तीते रानि रू तान ता'ल	रानी यशोदा हाथ से ताल दे रही है
ती ते रानि रु तान ता'ल	रानी (यशोदा) हाथ से ताल दे रही है
सुसुन तानाएः नानद लाल	(और) प्रभु नन्दलाल नाच रहे हैं
छिनि-छिनि साड़िताना पाएंजानि	छिन-छिन बज रही है पंजनी
हाए-हाए राजा रानि	हाय, हाय, राजा रानी (के साथ)
लेल तानाको सोबेन गोआलिनि।	देख रही हैं सभी गोपियां
बाङका बुङकुइः सुसुन ताना	वह आड़ी तिरछी नाच रहे हैं
जिलि मिलि ताना जुल ताना	(और) झिलमिल चमक रहे हैं
काजि तानाएः रानि सुसुनमे नीलमनि	रानी कहती है-नीलमणि, नाचो
हाए-हाए राजा रानि	हाय, हाय, राजा रानी (के साथ)
लेल ताना को सोबेन गोआलिनि।	देख रही हैं सभी गोपियां
चाण्डुः मोचा रे राजा रानि	उसके चांदमुख को राजा रानी
चुमा ताना किङ घाड़ि-घाड़ि	चूम रहे हैं घड़ी घड़ी
ओमाइ तानाकिङ दहि छेनि	उसे दे रहे हैं, दही-छेना
हाए-हाए राजा रानि	हाय, हाय, राजा रानी (के साथ)
लेल ताना को सोबेन गोआलिनि।	देख रही है सभी गोपियां
मोलोङ रेः टीका चानदान कान	उनके मस्तक पर टीका चंदन
तुरतान सिंगि लेकाएः जुलतान	जल रहा है जैसे उगता सूरज
काजिताना ताबु बुदु बाबु बानि	बुदु बाबू कर रहे हैं उसी का वर्णन
हाए-हाए राजा रानि	हाय, हाय राजा रानी (के साथ)
लेल तानाको सोबेन गोआलिनि।	देख रही हैं सभी गोपियां

☆☆☆

2. हेरा काना जोतो बेड़ा	सारी घाटी बोई गई है
हेरा काना जोतो बेड़ा	सारी घाटी (में अनाज) बुना गया है
गाइ पारोमजाना माराङ गाड़ा	(और) गाय नदी के पार चली गई
जू बोदे जू धाउड़िमे कानहाइ	कन्हाई, जाओ जल्दी दौड़ो
सेनोः जानाएः ताम जुमबुड़ि गाइ	तुम्हारी लोभी गाय चली गई
निर जानाएः ताम जुमबुड़ि गाइ	तुम्हारी लोभी गाय भाग गई
जू बोदे जू धाउड़ि में कानहाइ।	कन्हाई, जाओ जल्दी दौड़ो

किसान दोरे: होरो ताना	किसान रखवाली कर रहा है
जोम लेरे होए एराङ मेआ	अनाज खाये जाने पर गाली देगा
जू बोदे जू धाउड़ि में कानहाइ	कन्हाई, जाओ जल्दी दौड़ो
सेनो: जानाए: ताम जुमबुड़ि गाइ	तुम्हारी लोभी गाय चली गई
निर जानाए: ताम जुमबुड़ि गाइ	तुम्हारी लोभी गाय भाग गई
जू बोदेजू धाउड़ि में कानहाई।	कन्हाई, जाओ जल्दी दौड़ो
बुदु बाबु कोटोङ ता:इआ	बुदु बाबू (गाय को) रोके हुए हैं
धाउड़ि लेरे हो काए: दाड़िआ:	(किन्तु) वह दौड़ तो नहीं सकता
जू बोदे जू धाउड़ि में कानहाई	कन्हाई, जाओ जल्दी दौड़ो
सेनो: जानाए: ताम जुमबुड़ि गाइ	तुम्हारी लोभी गाय चली गई
निर जानाए: ताम जुमबुड़ि गाइ	तुम्हारी लोभी गाय भाग गई
जू बोदे जू धाउड़ि में कानहाई।	कन्हाई, जाओ जल्दी दौड़ो

☆☆☆

3. उरि: गुपिआते गोपाल — गाय चराने के बाद गोपाल

उरि: गुपिआते गोपाल	गाय चराकर गोपाल
हिजु: लेनाए: आकाल-बाकाल	वापस आया व्याकुल
आम नातिन दोआ काना	तुम्हारे लिए रखा हुआ है
रोका तोआ लोटा रे	ताजा दूध लोटे में
चो: लेमा	(आओ) चूम लूँ
आमा: सुगाड़ा मिरु मोचा रे	तुम्हारे सुन्दर सुग्गा मुखड़े को
चो: लेमा।	(आओ) चूम लूँ
सेन बेड़ा डागार-डुगुर	उसके ढुलमुल चलने से
ओड़ा: राटि सोभा जाना	घर शोभायमान हो गया
जोसोदा माए: काजिताना	मां यशोदा कहती हैं
एला बाछा सुगा रे	आओ मेरे प्यारे सुग्गे
चो: लेमा	(आओ) चूम लूँ
आमा: सुगाड़ा मिरु मोचा रे	तुम्हारे सुन्दर सुग्गा मुखड़े को
चो: लेमा।	(आओ) चूम लूँ

बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं (कि)
उरिः गुपि आलोम सेना	तुम गाय चराने न जाओ
कंस राजा मेनाइः ताबु	(क्योंकि) राजा कंस जो है
मुदाइ मुरकाटा रे	(वह) हमारा मुदई है
चोः लेमा	(आओ) चूम लूँ
आमाः सुगाड़ा मिरु मोचा रे	तुम्हारे सुन्दर सुग्गे मुखड़े को
चोः लेमा।	(आओ) चूम लूँ

☆☆☆

4. सेन लेनाञ वृंदा बिरते — मैं वृंदावन गया था

सेन लेनाञ वृंदा बिरते	मैं वृन्दावन गया था
उरिः गाइ को गुपि मेनते	गाय बैल चराने के लिए
कोदोम दारू बाङका दाड़ा रे	(देखा कि) कदम वृक्ष की बांकी डाल पर
रुतु ओरोङ दुब केआते	बैठकर वह बांसुरी बजा रहे हैं
कोदोम दारु बाङका दाड़ा रे	कदम वृक्ष की बांकी डाल पर
सुगाड़ा–सुगाड़ा हेरेल कुड़िको	सुन्दर सुन्दर मधुर युवतियाँ
(डाड़ि) दाः ते हिजुः आको	डाड़ी का पानी भरने आती हैं
आयाः रुतु दुराङ आयोमते	उसकी बांसुरी की आवाज सुनने का
एन घाड़ि–घाड़ि हिजुः आको डाड़िते	बार बार डाड़ी पर आती हैं
आयाः रुतु दुराङ आयोमते	उसकी बांसुरी की आवाज सुनने को
पाड़िआ पाचोन किचिरि	रंगीन, पाड़िया कपड़े पहने
जेताए आङगि, (जेताए) सासाङ साड़ि	कोई लाल कोई पीली साड़ी
एन लेका होको सिंगार कानको	ऐसा ही शृंगार धारण किए
बा तेगे तोपाकाना ताको सुपिद दो	उनके खोपे फूलों से ही भरे हैं
एन लेका होको सिंगारा कानको	ऐसा ही शृंगार धारण किए

पिरिति काजि कुलि मेनते	प्रीति की बातें पूछने के लिए
दो-दो सुफाल दोएआ एनते	मित्र सुफल, चलो वहाँ चलें
बुदु बाबु निआगे जागारे	बुदु बाबू यही कहते हैं
बाड़ाए-बुडुइः नुपुलि कुड़ि हातु रे	गांव में सांवरी-सुन्दर युवती हैं
बुदु बाबु हो निआगेः जागारे	बुदु बाबू यही कहते हैं

☆☆☆

5. गाड़ा जापाः रे प्रभुइः दुबा काना — नदी के किनारे प्रभु बैठे हुए हैं

गाड़ा जापाः प्रभुइः दुबा काना	नदी के किनारे (हमारे) प्रभु बैठे हुए हैं
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
आएः लो:ते लेपेल मोने ताना	उसे देखने का मन करता है-
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
कोदोम सुबारे रुतुइः ओरोङ ताना	कदंब के नीचे वे बांसुरी बजा रहे हैं
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
रुतु तेदो आञगेः नुतुमताना	बांसुरी से वे मेरा ही नाम ले रहे हैं
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
जी ताञ दो आलाए बालाए ताना	मेरा जी अकबक कर रहा है
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
आएः लो:ते बाकाड़ां सानाङ ताना	उसके साथ बात करने की इच्छा होती है
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
बुदु बाबु देआरे उदुर ताना	बुदु बाबू पीठ पर धक्का दे रहे हैं (कि)
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
दोला दोला दोला दोला दोना	सखि चलो, चलो, चलो, चलो
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो
आएः लो:ते बाकाड़ां सानाङ ताना	उनके साथ बात करने की इच्छा होती है
दो बोदे दो	चलो, जल्दी चलो

☆☆☆

6. छाएला दोलाबु लेला — सखि, चलो देखने चलें

नाकिगेनपे सुपिदेनपे	बाल संवारो, खोंपा बनाओ
पाड़िआ किचिर किचिरिनपे	(और) पड़िया कपड़ा पहनो
छाएला, दोलाबु लेला	छैला, चलो हम देखने चलें
बिर बितार प्रभुइः सुसुन तानारे	वन-बीच प्रभु नाच रहे हैं
छाएला दोलाबु लेला	छैला, चलो हम देखने चलें
होटाः रेदो मुंगा माला	गले में पहनो मूँगे की माला
तीरे साकोम काटारे पोला	हाथों में सकोम, और पैरों में पोला
छाएला दोलाबु लेला	छैला, चलो हम देखने चलें
बिर बितार प्रभुइः सुसुन तानारे	वन-बीच प्रभु नाच रहे हैं
छाएला दोलाबु लेला	छैला, चलो हम देखने चलें
रासिकान को एला दोला	रीझ लगने वालों! चलो चलें
बुदु बाबु नेरेगेः लेला	बुदु बाबू तो यहीं से देखेंगे
छाएला, दोलाबु लेला	छैला, चलो हम देखने चलें
बिर बितार प्रभुइः सुसुन तानारे	वन-बीच प्रभु नाच रहे हैं
छाएला, दोलाबु लेला	छैला, चलो हम देखने चलें

☆☆☆

7. गेल तुरि साए गुपिन को — सोलह सौ गोपियाँ

गेल तुरि साए गुपिन को	सोलह सौ गोपियाँ
सिङ बोंगा लोः सुसुन ताना को	प्रभु के साथ नाच रही हैं
दोला-दोला दोला दोलाबु लेला	चलो, चलो, चलो, हम दखने चलें
एला-एला एला एला	आओ, आओ, आओ, आओ
रासिकान को सुसुन ताना	रीझवार नाच रहे हैं,
सेवातान को सेवा ताना	सेवक सेवा कर रहे हैं
दोला दोला दोला दोलाबु लेला	चलो, चलो, चलो, हम देखने चलें
एला-एला-एला एला	आओ, आओ, आओ, आओ

बिर बितार ताला माला	वन के भीतर, ठीक उसके बीच
नीला ताना को किष्टो नीला	वे कृष्ण लीला रचे हुए हैं
दोला-दोला-दोला-दोलाबु लेला	चलो, चलो, चलो, हम देखने चलें
एला-एला एला एला	आओ, आओ, आओ, आओ
बुदु बाबु रुतुइः ओरोङ ताना	बुदु बाबू बांसुरी बजा रहे हैं
ब्रज गोपिन को सुसुन ताना	(और) ब्रज गोपियां नाच रही हैं
दोला दोला दोला दोलाबु लेला	चलो, चलो, चलो, हम देखने चलें
एला-एला-एला एला	आओ, आओ, आओ, आओ

☆☆☆

8. नेंदे-नेंदेः दुतिआना — वह रंगीन धोती पहना हुआ है

नेंदे-नेनदेः दुतिआना	वह रंगीन धोती पहना हुआ है
उरिः गाइकोएः गुपि ताना	(और) गाय-बैल चरा रहा है
बिर बितार जोलारेः दुबा काना	वन बीच वह चढ़ान पर बैठा हुआ है
रुतु तेदो आमगेः नुतुम ताना।	बांसुरी से वह तुम्हारा ही नाम ले रहा है
इचाः बा तेः डालिआना	(सिर पर) इचः फूल शोभ रहा है
सामाड़ोमतेः मालाकाना	(और) गले में सोने की माला है
सेर मेड़ेंद होड़ोमो जुलेताना	गलित लोहे सा-उसका शरीर जल रहा है
रुतु तेदो आमगेः नुतुम ताना।	(और) बांसुरी से वह तुम्हारा ही नाम ले रहा है
पारकाआते होञ लेलकेना	मैंने उसे दूर से ही देखा था
इनाते राधाञ हिआकाना	राधा, इसीलिए मैं (तुम्हारे) यहाँ आई हूँ।
पुरा चाण्डुः बिररेः तुराकाना	(लगता है) पूर्ण चन्द्र वन में उगा है
रुतु तेदो आमगेः नुतुम ताना।	बांसुरी से वह तुम्हारा ही नाम ले रहा है।
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं (कि)
नेकान होड़ो काञ लेलाना	मैंने ऐसा आदमी नहीं देखा है
सिङबोंगा चि बोंगाएः दुबाकाना	भगवान् या कोई देवता बैठा हुआ है
रुतु तेदो आमगेः नुतुम ताना।	बांसुरी से वह तुम्हारा ही नाम ले रहा है।

9. ओको कोरे छाएला–माएला — वह छैला

ओको– कोरे छाएला–माएला	वह छैला
ओको कोरे होए: दुबाकाना	वह कहाँ बैठा है
नलिता दा: आउलाङ सेना	ललिता, चलो हम पानी भरने चलें
भाइ राधा–राधा नुतुम	राधा, राधा, के स्वर में
रुतुइः ओरोङ ताना भाइ	वह बांसुरी बजा रहा है
राधा–राधा नुतुम।	राधा राधा के स्वर में
बागे तामगो उतु–मांडि	खाना–पकाना छोड़ दो
सेन कोआलाङ ने घाड़ि	चलो हम इसी घड़ी जाएँ
कुड़ाम बितार जीरे रुडुङताना	छाती के अन्दर हृदय में धुकधुकी उठ रही है
भाइ राधा–राधा नुतुम	राधा राधा के स्वर में
रुतुइः ओरोङताना भाइ	वह बांसुरी बजा रहा है
राधा–राधा नुतुम।	राधा राधा के स्वर में
जीरे रुतु गुतुजाना	बांसुरी मन में बिंध गया
मुटु दांगार लेका बाले ताना	(मन) बड़ी लकड़ी की तरह धधक रहा है
निदा सिंगि ईमरे गेदेताना	मेरा जी रात–दिन कटा जा रहा है
भाइ राधा–राधा नुतुम	राधा राधा के स्वर में
रुतुइः ओरोङ ताना भाइ	वह बांसुरी बजा रहा है
राधा–राधा नुतुम।	राधा राधा के स्वर में
आलाए–बालाए जी दोना	जी अकबक कर रहा है
इलि बुल नाञ बुलाकाना	मुझमें शराब का नशा आ गया है
बुदु बाबु इनाए: दुराङ ताना	बुदुबाबू यही गा रहा है
भाइ राधा–राधा नुतुम	राधा राधा के स्वर में
रुतुइः ओरोङ ताना भाइ	वह बांसुरी बजा रहा है
राधा–राधा नुतुम।	राधा राधा के स्वर में

☆☆☆

10. बिर बितार प्रभु गोपाल वन के बीच प्रभु गोपाल

बिर बितार प्रभु गोपाल	वन के बीच प्रभु गोपाल
बाइ तादाए: नीला चामात्कार	रचे हुए हैं (रास) लीला चमत्कार
झिकि-मिकि जुलताना	(जो) झिल-मिल झिल-मिल चमक रहा है
सोबेन ब्रजधनी	सारी ब्रज नारियाँ
राधा विनन्दिनी	राधा, विनंन्दिनी (आदि युवतियां)
जोतो को हिआकाना हो	सभी आई हुई हैं
एला-एला-एला एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ, हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला	चलो, चलो, चलो, चलो
सिंङ बोंगा बाइतादा नीला हो	प्रभु ने रास लीला रची है
एला-एला-एला- एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला।	चलो, चलो, चलो, चलो
पुरा चाण्डु: लेकाए: तुराकाना	वे पूर्ण चन्द्र की तरह उगे हुए हैं
ब्रज गोपि को इपिलाकाना	ब्रज गोपयां तारिकाएं बनी हुई हैं
एन लेका सोभा काना	इस तरह शोभा छाई हुई है
निदा सिंगि ताबु	आओ दिन रात
सेनेगे आबु	हम चलते ही रहें
दो-दो-दो-दोलाबु हो	बंधु, चलो, चलो, चलो, चलो
एला-एला-एला- एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला	चलो, चलो, चलो, चलो
सिङ बोंगा बाइतादा नीला हो	प्रभु ने रास लीला रची है
एला-एला-एला-एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला।	चलो, चलो, चलो, चलो

बिङ होड़ोको हादुडुआ काना	नाग और नर उतरे हुए हैं
बोंगा मुनि को दुबाकाना	देव और मुनि बैठे हुए हैं
लेल ताना को नीला	सभी रास लीला देख रहे हैं
प्रभु सिरोमानि	प्रभु शिरोमणि
रुतु ओरोङ तानिः	बजा रहे हैं बांसुरी
तालारेः सुसुन ताना हो	(और) बीच में नांच रहे हैं
एला-एला-एला-एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला	चलो, चलो, चलो, चलो
सिङ बोंगा बाइतादा नीला हो	प्रभु ने रास लीला रची है
एला-एला-एला-एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला।	चलो, चलो, चलो, चलो
सोबेन होड़ोको उडुङाकाना	सारे लोग निकल गए हैं
बुदुबाबु ताबु तायोमा काना	केवल बुदुबाबू ही रह गए हैं
इपाएः डोण्डो होड़ो लेका	एक मूर्ख आदमी की तरह
हिजुः आएः चिहो	(पता नहीं) वह आएगा
काएः हिजुः आहो	या नहीं आयेगा
आबु दोबु सेनेगेआ हो	हम तो चलते ही चलेंगे
एला-एला-एला-एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला	चलो, चलो, चलो, चलो
सिङ बोंगा बाइतादा नीला हो	प्रभु ने रास लीला रची है
एला-एला-एला-एलाबु लेला	आओ, आओ, आओ हम देखने चलें
दोला-दोला-दोला-दोला।	चलो, चलो, चलो, चलो

☆☆☆

11. तिरि-रिरि, तिरि रिरि — (बांसुरी की) तिरि-रिरि आवाज

तिरि रिरि तिरि रिरि	तिरि रिरि की आवाज में
रुतुइः ओरोङ ताना	वे बांसुरी बजा रहे हैं
राधा-राधा राधाएः नुतुमताना	राधा, राधा कह कर पुकार रहे हैं
इनाते दुति आञदोञ बालाए ताना।	इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ

दिन दिन दिन सोबेन दिनते	प्रत्येक दिन, सब दिन
इनागे गुतुतान	यही बेधता है
निदासिंगि दुति जी रे रुडुङतान	रात दिन, हे सखी, हृदय कूटता रहता है
इनाते दुति आञदोञ बालाए तान।	इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ
लेलि लेलि लेलिते	ढूँढ़ने, देखने से
का होए: लेलो:आ	वे दिखाई नहीं देते
मोने-मोने मोनेरेञ ले लिआ	(केवल) मन में ही दिखाई देते हैं
इनाते दुति आञदोञ बालाए तान।	इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ
दो दो दो दो दो बोदे दो	चलो, चलो, चलो जल्दी चलो
बोदे तेञ काजि तान	जल्दी चलो यही रह रहकर
बुदुबाबु ताबु इनागे दुराङतान	बुदुबाबू गीत गा रहे हैं
इनाते दुति आञदोञ बालाए तान।	इससे, हे सखी, मैं व्याकुल हो रही हूँ

☆☆☆

12. सेन लेनाञ जामुनाते — मैं यमुना गई थी

सेन लेनाञ जामुनाते	मैं यमुना गई थी
हिजु:तान रे आनलि ते	(और) वापसी में, हे ललिते (मैंने देखा)
रासिका नागार होरा रे: कामिताना रे	(कि) रसिक नागर रास्ते में काम कर रहे हैं
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
बा कान बा माला रे।	फूलों की माला पहने हुए हैं
लेल कि:ञाए: साए-साएते	उन्होंने मुझे देखा तिरछी आंखों से
लानदा केदाए: माआड़िंते	वे मुस्कुराए धीरे से
बा मालाते बा किञा:ए:होटो रे	(और) उन्होंने फूलों की माला गले में पहना दी
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
बा कान बा माला रे।	फूलों के माला पहने हुए हैं

साब कि:ञाए: साकिञ मेनते	उन्होंने संगिनी कहकर मुझे पकड़ लिया
हिड़िकि:ञाए: हेड़ेम जागार ते	मीठी बातों से मुझे ठग लिया
दुब कि:ञाए: लेंगा ती पानति रे	(और) अपनी बाईं ओर मुझे साथ बैठाया
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
बा कान बा माला रे।	फूलों की माला पहने हुए हैं
गाड़ा जापा: कोदोम बिर रे	नदी के किनारे कदंब वन में
कृष्ण प्रेमते आनलिते	हे ललिते, श्री कृष्ण ने प्रेम से
चुमा कि:ञाए: मोचाते-मोचारे	मुझे मुखड़े पर चूम लिया
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
प्रभु गातिञ रे	हमारे प्रिय प्रभु,
बा कान बा माला रे।	फूलों के माला पहने हुए हैं

☆☆☆

13. राधा रानी काजिताना — राधा रानी कह रही है

राधा रानी काजिताना	राधा रानी कह रही है (कि)
प्रभु काजितेबु हिड़ि जाना	प्रभु की बात से हम ठगी गई
आगो दुति	हे सखियों
निमिनाङ सा'ज सोबेन ओकारोन दो।	इतना साज-शृंगार बेकार पड़ गया
ताला निदा चाबा जाना	आधी रात बीत गई
सिम मारा: को बाकाड़ां ताना	मुर्गे और मोर बोल रहे हैं
आगो दुति	हे सखियों,
बा उरु को होनोर बेड़ातान दो।	(फूलों पर) भौंरे मंडरा रहे हैं
बिर बा हो उरुड़ ताना	वन फूल झर रहे हैं
सिंगि तुर सा: आंगि जाना	पूरब में लालिमा छा गई
आगो दुति	हे सखियों,
बा कान बा सोबेन गोसोतान दो।	खिले हुए फूल मुर्झा रहे हैं
चि मेनते चिकाजाना	किस बात से क्या हो गया
हिजु:आए: चि: होसोड़ोकि:ञा	वह आयेंगे भी या हमें ठग लिया
आगो दुति	हे सखियों,
बुदुबाबु दुराङ बाइतान दो।	बुदु बाबू (यही) गीत गा रहे हैं

14. सोबेन गोपिन को दुबकेना	सभी गोपियाँ बैठी हुई थीं
सोबेन गोपिन को दुबकेना	(मैं और) सारी गोपियां बैठी हुई थी
बाड़ाइ बुड़ि रा: किञा:	(तभी) बड़ई-बूढ़ो ने मुझे बुला लिया
नेरे सुफल रुतु आदाकान	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
ब्रज गोपिन कोलो:ञ दुबकेना हो	(तब) मैं ब्रज गोपियों के साथ बैठा हुआ था
नेरे सुफल रुतु आदाकान।	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
सोबेन गोपिन को दुबकेना	सारी गोपियों ने मुझे घेर लिया (था)
तालारे होञ सुसुन केना	(और) मैं बीच में नाच रहा था
नेरे सुफल रुतु आदाकान	सुफल यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
रासिकाते का होञ ठोराना हो	रसविभोर, मुझे कुछ भी याद नहीं आया
नेरे सुफल रुतु आदाकाना।	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
कुड़िको तालारे आदाकान	औरतों के बीच ही (वह) खो गई है
नामो:आ चि का नामो:आ	मिलेगा भी कि नहीं मिलेगा
नेरे सुफल रुतु आदाकान	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
हिआतिङते का होञ जोमतान हो	चिन्ता से मैं खाना तक नहीं खाता
नेरे सुफल रुतु आदाकाना।	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं (कि)
बाड़ाइ बुड़ि इतुआना	बढ़ई-बूढ़ी यह सब जानती है
नेरे सुफल रुतु आदाकान	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है
निदा सिंगि जीरेञ उडु:तान हो	रात दिन मुझे इसी की चिन्ता है
नेरे सुफल रुतु आदाकाना।	सुफल, यहीं मेरी बांसुरी खो गई है

☆☆☆

15. बाड़ाइ बुड़ि नुपुलि कुड़ि	बड़ाई बूढ़ि, कुरुप औरत
बाड़ाइ बुड़ि नुपुलि कुड़ि	(उस) कुरूपा औरत, बड़ाई ने
आञके: हिड़ि कि:ञरे	हे सखि, मुझे ठग लिया
गाड़ा जापा: कोदोम सुबा	नदी के किनारे कदम्ब तले
एनते: इदि कि:ञा रे।।	वह मुझे वहाँ ले गई

रासिका नागर हरि	रसिक नागर हरि
एनरेः दुबाकाना रे	वहाँ बैठे हुए हैं
आञ लेलते इनुङ मेनते	मुझे देखकर लीला पूर्वक
रुतुइः ओरोङ तानारे।	वह बांसुरी बजा रहे हैं।
आञ जापाःए होपोर केते	वह मेरे पास आये
बा तेः बा किःञारे	(और) उन्होंने मुझे फूल पहना दिया
तिसिङाते साकिङ जाना	आज से हम साथी हुए
मेनतेः काजिआःञा रे।	ऐसा उन्होंने मुझसे कहा
इसु खेलातेः जागार केना	हमने क्रीड़ापूर्वक बातें की
बुदु बाबु लेलान रे	बुदु बाबू ने यह सब देख लिया
ने जोनोम रे नेका सुकु	इस जन्म में ऐसा सुख
ओड़ोः का नामोःआ रे।	सखि, और नहीं मिलेगा

☆☆☆

16. एनलेकान सुगाड़ाताञाः — मेरा वह सुन्दर

एन लेकान सुगाड़ा ताञ	इस तरह के मेरे सुन्दर सलोने को
ओकोए उकु किःआ रे	कौन चुरा ले गया?
हाए रे हाए रे ताञ रे	हायरे, हायरे, हायरे
हाए रे ओकोए हिड़ि किःआ	मुझे किस ने ठग लिया
हाए रे हाए रे ताञ रे।	हाय रे, हाय रे
नलिता गो इदि तान रे	हे ललिता, जो ले गया है
ओकोए लेल लिःआ रे	उसे किसने देखा है?
हाए रे हाए रे ताञ रे	हायरे, हायरे, हायरे
हाए रे ओकोए उकु किःआ	उसे किसने छिपा लिया?
हाए रे हाए रे ताञ रे।	हायरे, हायरे, हायरे
सोबेन गोपिन सेनोःआबु	हम सब गोपियां चले
दोला नामिआबु रे	और चलकर उसे खोंजे
हाए रे हाए रे ताञ रे	हायरे, हायरे, हायरे
हाए रे ओको दिसुम तिआ	वह किस देश की चला गया?
हाए रे हाए रे ताञ रे।	हायरे, हायरे, हायरे

बुदु बाबु कुलिआबु	हम बुदु बाबू से पूछें
आए: लेल लि:आ रे	(क्योंकि) जाते समय उन्होंने देखा था
हाए रे हाए रे ताञ रे	हायरे, हायरे, हायरे
एनते आए: इदिबुआरे	हमलोगों को वहीं ले जायेंगे
हाए रे हाए रे ताञ रे।	हायरे, हायरे, हायरे

☆☆☆

17. हातु–हातु, गाड़ा–गाड़ा — गाँव–गाँव, नदी–नदी

हातु–हातु गाड़ा–गाड़ा	गाँव–गाँव और नदी–नदी
सुफल लो: किङ होनोर बेड़ा	वे सुफल के साथ घूमते–फिरते थे
आएआ: नातिन गो दुति इआम बिउर ताना	उसके लिए, हे सखी, हम रोते फिरते हैं
सुगाड़ा ताञा: ओकोए उकु कि:आ।	हमारे सुन्दर को किसने छिपा लिया
मोद तेलिङ इनुङकेना	हम एक साथ खेलते थे
एनकाजि काए: उडु:आना	इस बात को उन्होंने नहीं सोचा
एन गातिञ गो दुति ओको हातु ति:आ	वे प्रिय, हे सखी, किस गाँव को चले गये
सुगाड़ा ताञा: ओकोए उकु कि:आ।	हमारे सुन्दर को किसने छिपा लिया
हाए गातिञ जी ताञा:	हाय, मेरे प्रिय, मेरे प्राण
आञा: सुफल ओकोतिआ	हे सुफल, कहाँ चले गये?
आएआ: नातिन गो दुति मेद दा: जोरो ताना	उनके लिए, हे सखी, आँसू झर रहे हैं
सुगाड़ा ताञा: ओकोए उकु कि:आ।	हमारे सुन्दर को किसने छिपा लिया?
बुदु बाबु लेल लि:आ	बुदु बाबू ने उसे देखा है
कुबुजि कुड़ि उकु तिआ	कुब्जी ने उसे छिपा लिया है
एन गातिञ गो दुति काए: हिजु:आ	वह प्रिय अब नहीं आएगा
सुगाड़ा ताञा: ओकोए उकु कि:आ।	हमारे सुन्दर को किसने छिपा लिया

☆☆☆

18. विनंदिनी, कुलि जा:इआ — विनंदिनी पूछ रही है

विनंदिनी कुलि जा:इआ	बिनन्दिनी से (राधा) पूछ रही है
प्रभु गातिञ ओको तिआ	सखि, हमारे प्रभु कहाँ गए?
सेनो:आबु दोलाबु नामिआरे	चलो, हम उन्हें ढूँढ़ें
ओ नलिता	हे ललिते
ओको तिआ नागर कालिआ।	नागर कालिया, कहाँ गए?
बोदे तेञ हिजु:आ मेनते	जल्दी ही आऊँगा कहकर
दुतिः हिड़ि कि:ञा रे	सखि, उसने हमें ठग दिया
निमिनाङ दिनते कारेः लेलो:आरे	इतने दिन होने पर भी वह दिखाई नहीं देते
ओ नलिता	हे ललिते
ओकोतिआ नागर कालिआ।	नागर कालिया, कहाँ गए?
हिजु:आ चि काएः हिजु:आ	वह आएंगे या नहीं आएँगे
हितातिङते गोजो:आ रे	चिंता से मैं मर जाऊँगी
निदा सिंगि दुति मोनेरे मेना:इआ	सखि, रात-दिन मुझे उन्हीं की कामना है
ओ नलिता	हे ललिते
ओकोतिआ नागर कालिआ।	नागर कालिया, कहाँ गए?
ओकोतिआ ओकोतिआ	वह कहाँ चले गए, कहाँ हैं
एनतेञ सेनो:आरे	हम वहीं जाएँगे
बुदुबाबु ताबु सोंगेञ इदिआरे	हम बुदु बाबू को भी साथ ले जाएँगे
ओ नालिता	हे ललिते
ओकोतिआ नागर कालिआ।	नागर कालिया, कहाँ गए?

☆☆☆

19. आञाः सुगाड़ा सुनदार नाटवार — मेरे सुन्दर नटवर

आञाः सुगाड़ा सुनदार नाटवार	हमारा सुन्दर नटवर
ओको तिआ कालिआ नागर	हमारा सांवला नागर कहाँ चला गया?
ओकोए नातिन	(मैं) किसके लिए (जा रही हूँ?)
दुति, ओको तिआ कालिआ नागर।	सखी, वह सांवला नागर कहाँ चला गया

आञ दो होञ जीदाकान	मैं जीवित हूँ
जी ताञ हो सेनो: जान	लेकिन मेरी जान निकल गई
ओकोए नातिन	(मैं) किसके लिए (जी रही हूँ?)
दुति, जी ताञ हो सेनो:जान।	सखी, मेरे प्राण निकल गए
दारू दाड़ा रेञ हाका गोजेन	मैं किसी पेड़ की डाली पर फांसी लगा लूँगी
ने दिसुम ताला रे	(मै) इस दुनिया में (नहीं रहूँगी)
ओकोए नातिन	मैं किसके लिए (जी रही हूँ?)
दुति, ने दिसुम ताला रे।	सखी, इस दुनिया में
सुगाड़ा सोमाए ताञा: बासि गिड़िजान	मेरी सुन्दर जवानी बासी हो गई
बुदु बाबु दुराङ बाइतान	बुदु बाबू गीत बना रहा है
ओकोए नातिन	(मैं) किसके लिए (जीवित हूँ?)
दुति, बुदु बाबु दुराङ बाइतान।	सखी, बुदु बाबू गीत बना रहा है

☆☆☆

20. आगो, आगो, आगो दुति — हे सखि, सुनो सखि

पायार — आगो, आगो, आगो दुति	(मुझे बताओ), सखि
ओकोतिआ ब्रजपाति	कहाँ चले गए ब्रजपति?
मागे मागेते बोछोर मुड़िजान	माघ माघ कहते हुए वर्ष खत्म हो गया
ओड़ो: गातिञ काए: हिजु:आ	वह और नहीं आएंगे
आञदो होञ ठोओर केदा	मुझे इसका पता लग गया
ओकोरे होए: लेएठ गिड़िनजान।	(पता नहीं) वे कहां बंध गए
राङ — नलिता वृन्दा दुति	हे ललिता, वृन्दा, सखि
ओकोतिआ ब्रजपाति	कहाँ गए ब्रजपति
निदा सिंगि कुड़ाम बितार	रात दिन हृदय में
आए:गे उङ्: तान	उन्हीं की चिन्ता है
दुमबुर लेका आञा:जी	मेरा मन मधुमक्खी की भांति
ओटाङ बिउर तान।	उड़ता फिरता है

पायार — बिर रे बा उरुडुताना | वन के फूल झर रहे हैं
बुरु सेरेङ को लोलो ताना | पहाड़ के पत्थर तप रहे हैं
चेड़ें रेएङ को रागो बागो ताना | पंछी और झींगुर विलाप कर रहे हैं
बुरु रे साकाम ओटाङताना | पहाड़ से पत्तियाँ उड़ रही है,
सेतोम दाः आनजेद ताना | झरने सूख रहे हैं
लेल-लेलते मेद दाः जोरोताना। | यह देखकर मेरे आँसू बह रहे हैं,

राङ — हाए गातिञ ओकोतिञा | हाय सखि, वे कहां गए?
हिजुआएः चि काएः हिजुःआ | वे आएंगे या नहीं आएंगे?
होरा लेलते हिआतिङते | राह देखते हुए चिन्ता से
मेद दाः जोरोताना | आंसू झर रहे हैं
आरिल लेका आञाःजी | मेरा जी वफई की तरह
लेआ गिड़ि ताना। | पिघला जा रहा है

पायार — आञ दो होञ दुडुम लेना | मैं तो सोई हुई थी
हापे-हापेतेः बिरिद जाना | (जब) वे चुपचाप उठे
कुमबुडु लेकाएः उडुङ हापेजाना | (और) चोर की तरह निकल गए
इसु खोओन रेञ ठोओर केदा | बहुत देर में मुझे लगा (कि)
गातिञ ताञ दो ओको तिआ | मेरे प्रिय कहीं चले गए
एन निर गेः निर गिड़िनजान। | (और) निकले तो निकल ही गए

राङ — आबेन दोबेन लेलाना | तुमने तो देखा होगा
ओको मुलितेः सेनोः जाना | वे किस तरफ चले गए?
दोला दोला दोलाबुना | सखि, चलो चलें,
आञदोञ बालाए तान | मैं तो व्याकुल हूँ
हिजातिङते आएः नातिन | उसके लिए चिंतन करते हुए
जी गे सेनोः ताना। | मेरा जी चला जा रहा है।

पायार — मथुरा रेः नीला ताना | वे मथुरा में लीला कर रहे हैं
राधा कालाङ किनी जाना | राधा कलंकिनी बन गई
निआ काजि वेद रे ओलाकाना | यह बात वेद् में लिखी हुई है
कुबुजि कुड़ि छुलि किःआ | कुब्जी ने छल किया
दिसुम रेन राजा ताञाः | मेरी धरती के राजा के साथ
आएः लोः पिरिति तुद गिड़ि जाना। | उसके साथ की मेरी प्रीति उखड़ गई

राङ — बुदु बाबु काजिताना	बुदुबाबू कहते हैं (कि)
मथुरा रे: राजा जाना	श्री कृष्ण मथुरा के राजा हो गए
कुबुजि कुड़ि सुगाड़ा जाना	कुब्जी सुन्दरी हो गई
आञ दोञ इतुआना	मैं यह जानता हूँ
आबेन आलोबेन सेना गातिञ	सखि तुम वहां मत जाना
आए: लो: नीला ताना।	(अब) वे उसके साथ लीला कर रहे हैं

★★★

21. ओकोतिआ ब्रजबाला — ब्रजबाला कहाँ गए?

ओको तिआ ब्रजबाला	कहाँ गया ब्रज-बाल
सुगाड़ा सुनदोर काला	श्याम सुधड़ सुन्दर
इदिकेदाए: सोबेन नीला खेला	लीला, खेल सब कुछ वह ले गया
आगो दुति सेनो:आबु दोला।	सखि, चलो हम वहाँ चलें
आञ दोरेञ चिकाजाना	मझे यह क्या हो गया—
निदा सिंगि नुबा: जाना	मेरे लिए रात-दिन अंधकार हो गया
ति: इदिञपेरे दुति दोला	मुझे वहाँ सहारा देकर ले चलो
आगो दुति सेनो:आबु दोला।	सखि, चलो हम वहाँ चलें
तिसिङ जोदि काबु सेना	आज यदि नहीं गये हम
तोबे आञदोञ गोजो:आना	तब मर ही जाऊँगी मैं
जी बितार जुल ताना जाला	जी के अन्दर जल रही है ज्वाला
आगो दुति सेनो:आबु दोला	सखि, चलो हम वहाँ चलें
आञ दोरेञ ठोओराना	मुझे ऐसा लगता है
मथुराते: सेना काना	(कि) वे मथुरा गए हैं
बुदु बाबु एनरे: लेल लि:आ	बुदु बाबू ने उन्हें वही देखा था
आगो दुति सेनो:आबु दोला।	सखि, चलो हम वहाँ चलें

★★★

22. ओकोरेः उकु किःआ प्रभु सिरोमनि — प्रभु शिरोमणि को कहाँ छिपा दिया

ओकोए उकुकिःआ प्रभु सिरोमनि	प्रभु शिरोमणि को किसने छिपा लिया
ओकोए नातिनबु ताइना ब्रज गोपिन	हम ब्रज की गोपियाँ किसके लिए जीएँ
सोबेन दोलाबुना	सखियों, चलो हम सब चले
दुति गाड़ारेबु डोबे गोजेना	हम नदी में डूब मरें
सोबेन दोला बुना।	चलो हम सब चलें
ने दिसुम तालारेबु जीदा काना ब्रेथा	हम व्यर्थ ही इस दुनिया में जन्में हैं
नलिता चमपाकला ओगो वृन्दा	हे ललिता, चम्पकलता, वृन्दा सखियाँ
सोबेन दोला बुना	चलो हम सब चलें
दुति दारुरेबु हाका गोजेना	सखियों, हम पेड़ से कूद मरे
सोबेन दोलाबुना।	चलो हम सब चलें
जाति-पाति दुकु-सुकु सोबेन सेनोःजाना	जाति पाति, दुख-सुख सब चला गया
कुलो कालांक जाना इना ताइजाना	कुल में कलंक हुआ, वही रह गया
सोबेन दोलाबुना	चलो हम सब चलें
दुति इकिर रेबु आतु गोजेना	सखियों, हम गहराई में बह मरें
सोबेन दोलाबुना।	चलो हम सब चलें
बुदु बाबु काजि ताना सिंगिनुबाः जाना	बुदु बाबू कहते हैं कि दिन को ही रात हो गई
दोला-दोला दोलाबु सोबेनको दोलाबुना	चलो, चलो, चलो, चलें
सोबेन दोलाबुना	चलो हम सब चलें
दुति काटा सुबारे जीबु हादेना	सखियों, हम उनके पैरों में प्राण दे दें
सोबेन दोलाबुना	चलो हम सब चलें

☆☆☆

23. कुइलि कुहु ताना — कोयल कूक रही है

कुइलि कुहु ताना	कोयल कूह रही है
बोछोर मुंडि जान	वर्ष खत्म हो गया
तेउ काएः लेलोःआ	तब भी वह दिखाई नहीं देते
मोडें तुरि माएः नेंडा तुकादा रे	पाँच-छः दिनों (में आने) की बात कर गये थे
आहो गातिञ ओकोतिःआ	हाय, प्रिय कहाँ चले गए
आहो सांगाञ चिमाए तिःआ।	हाय, हमारे संगी कहाँ चले गए

मुरुद बा बा जान	पलास के फूल खिले
मानदुकाम सुड़ा जाना	महुवा की कोपलें फूटीं
तेउ काए: लेलो:आ	तब भी वह दिखाई नहीं देते
आगो वृन्दा ओकोए नातिन बा लाङ गालाङ	हे वृन्दा, हम किसके लिए माला बनाएँ
आहो गातिञ ओकोति:आ	हाय, हमारे प्रिय कहाँ चले गए?
आहो सांगाञ चिमाए ति:आ।	हाय, हमारे संगी कहाँ चले गए
आहो होरा लेल लेलते	उनकी राह देखते देखते
जोम का जोमो:आ तीते	हाथ से खाना भी नहीं खाया जाता
तेउ काए: लेलो:आ	तब भी वह दिखाई नहीं देते
हिजु:आ चि ताञ काए: हिजु:आ रे	पता नहीं वे आयेंगे या नहीं आएँगे
आहो गातिञ ओकोति:आ	हाय, हमारे प्रिय कहाँ चले गए?
आहो सांगाञ चिमाए ति:आ।	हाय, हमारे संगी कहाँ चले गए?
सोबेन गोपिन सेनो:आबु	हम सब गोपियाँ मिलकर जाएँ
बुदु बाबु लो: नामिआबु	बुदु बाबू के साथ उन्हें खोजें
तेउ काए: लेलो:आ	पर वे दिखाई नहीं देते
निदा सिंगि आबु इनाबु कामिआरे	हम उन्हें रात-दिन खोजते फिरें
आहो गातिञ ओकोति:आ	हाय, हमारे प्रिय कहाँ चले गए?
आहो सांगाञ चिमाए ति:आ।	हाय, हमारे संगी कहाँ चले गए?

☆☆☆

24. नलिता वृन्दा दुति — हे सखि, हे ललिता

नलिता वृन्दा दुति	हे ललिता और वृन्दा,
सेनो:बेन मथुराते	तुम मथुरा जा कर देखो
चिका मेनते	(कि) किस कारण से
प्रभु काए: हिजु: नेते	प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं
चिका मेनते	किस कारण से
निदा सिंगिञ उडु:ताना	रात दिन मुझे इसकी चिंता है
बुलाकानाए: चि कामिते	(कि) क्या वे काम में मत्त हैं
इना मेनते	(और) इसी कारण
प्रभु काए: हिजु: नेते	वह यहाँ नहीं आ रहे हैं
इना मेनते।	इसी कारण

एन हातुरेन हापानुम को	उस गाँव की युवतियों ने
बुल ता:इआको रानुते	उन्हें दवा पिलाकर मत्त बना दिया है
इना मेनते	इसी कारण से
प्रभु काए: हिजु: नेते	प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं
इना मेनते।	इसी कारण से।
जू ना बोदे जू सेनो:बेन	जाओ तुम जल्दी जाओ
बुदु बाबु लो: मोद ते	बुदु बाबू को साथ ले जाओ
चिका मेनते	किस कारण से
प्रभु काए: हिजु: नेते	प्रभु यहाँ नहीं आ रहे हैं
चिका मेनते।	किस कारण से

☆☆☆

25. सोबेन गोपिन को आयुमेपे — सभी गोपियों, सुनो

सोबेन गोपिन आयुमेपे	सभी गोपियाँ, सुनो
दहि चाटु दुपिलेपे	दही का मटका सिर ले लो
इसु दिनाते काञ लेलाना सोंगि मेनते	बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए
सेनो:आबु मथुरा ते	चलो, हम मथुरा चलें
इसु दिनाते काञ लेलाना सोंगि मेनते।	बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए
सोलोहो सिंगारेनपे	सोलहों श्रृंगार कर लो
हेनदे आङगि किचिरिन पे	नीली, रंगीन कपड़ा पहन लो
कुलि लेरे काजिआबु दहि मेनते	पूछने पर कहेंगे कि दही है
सेनो:आबु मथुराते	चलो, हम मथुरा चलें
इसु दिनाते काञ लेलाना सोंगि मेनते।	बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए
दोला-दोला-दोला मेनते	चलो, चलो, चलो कहकर
सामपोड़ोन जाना वृन्दे दुति	वृन्दावन की सखियाँ तैयार हो गई
लेल लेरे हिजु:आ ताञ सोंगि मेनते	हमें देखते ही साथी कहकर कृष्ण आयेंगे
सेनो:आबु मथुराते	चलो हम मथुरा चलें
इसु दिनाते काञ लेलाना सोंगि मेनते।	बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए
जी ताञ दो हिआ तिङते	मेरा मन चिंता से भरा है
सेनो: ताना सोमाए दिनाते	दिन दिन समय जा रहा है
बुदु बाबु दुराङ बाइतान हिआतिङते	बुदु बाबू चिंतित मन से गीत गा रहे हैं
सेनो:आबु मथुरा ते	चलो हम मथुरा चलें
इसु दिनाते काञ लेलाना सोंगि मेनते।	बहुत दिनों से प्रिय के दर्शन नहीं हुए

26. हातु जाइड़ कोड़ा कुड़ि — गाँव के सब नर–नारी

हातु जाइड़ कोड़ा कुड़ि	गाँव भर के नर–नारी
इआम ताना किङ राजा रानी (हो)	राजा रानी सभी रो रहे हैं
ताड़ाए काटा बोंगा मेनते	चरण कमलों की पूजा के लिए
सोबेन बालाए ताना (हो)	सब लालायित हैं
आहो गोमकेम सेना चि काम सेना (हो)।	प्रभु, तुम वापस जाओगे या नहीं जाओगे?
निदा सिंगि राधामणि	रात दिन राधामणि
आम नातिन रुयुद तानि: (हो)	तुम्हारे लिए रोया करती है
आएआ: काजि बिनति मेनते	उसकी बात अर्ज करने
आलिङ दो हिआकाना (हो)	हम यहाँ आये हैं
आहो गोमकेम सेना चि काम सेना (हो)।	प्रभु, तुम वापस जाओगे या नहीं जाओगे?
जे दिनातेम हिआ काना	जिस दिन से तुम यहाँ आये हो
एन दिनाते काए: जोमाना (हो)	उस दिन से उसने खाना भी छोड़ दिया है
जीदाकाना ची: गोए: जाना	पता नहीं जीवित है या मर गई
इनाञ हिआतिङ ताना (हो)	हमें इसी की चिंता है
आहो गोमकेम सेना चि काम सेना (हो)	प्रभु, तुम वापस जाओगे या नहीं जाओगे?
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं—
आम चिमताङेम सेना (हो)	तुम कब जाओगे!
आनरे बेआकुल ताना	वहां सभी व्याकुल हैं
सोबेन होरा गे लेल ताना (हो)	सभी तुम्हारी राह देख रहे हैं
आहो गोमकेम सेना चि काम सेना (हो)	प्रभु, तुम वापस जाओगे या नहीं जाओगे?

☆☆☆

27. तिसिङ निदाञ कुमु लेना — आज रात को मुझे सपना आया

तिसिङ निदाञ हिजु: लेना	आज रात को मुझे सपना आया
प्रभु गातिञ रे हिजु: लेना	कि मेरे प्रिय प्रभु आए हुए हैं
नलिता रे, इसु निदालिङ नीला केना	ललिता, हमने रातभर लीला की
आए: नातिनजी ताञ दो लो ताना।	उनके लिए मेरा जी जल रहा है
आलोको तिलोक काना	उन्होंने टीका–तिलक लगाया है
बोंगा बुरु गोए: तुरा काना	देवता की तरह उगे हुए हैं
नलिता रे, मारा: ईलते: चुड़ाकाना	ललिता, उनके जुड़े में मयूर पंख हैं
आए: नातिन जी ताञ दो लो ताना।	उनके लिए मेरा जी जल रहा है

नेंदे–नेंदेः दुतिआना	वह रंगीन धोती पहने हुए हैं
रांगा रुतु गोएः रुतुआना	(और) रंगीन बांसुरी बजा रहे हैं
नालिता रे, बिरबातेः माला काना	ललिता वह वन फूलों की माला पहने हुए हैं
आएः नातिन जी ताञ दो लो ताना।	उनके लिए मेरा जी जल रहा है
बांका–बुंकु तिंगुआ काना	वह आड़े–तिरछे खड़े हैं
मुचु–मुचु गोएः लानदा ताना	वह मुस्की हँसी हँस रहे हैं
नालिता रे, राधा–राधा रुतुइः ओरोङ ताना	ललिता, वह राधा–राधा स्वर में बांसुरी बजा रहे हैं
आएः नातिन जीताञ दो लो ताना।	उनके लिए मेरा जी जल रहा है
पारका रे गोञ तिंगु केना	मैं दूर ही खड़ी थी
इनाते गातिञ लेल लिःआ	तभी मैंने उसे देख लिया
नालितारे, बुदु बाबुलोः किङ ताइकेना	ललिता, वह बुदु बाबू के साथ थे
आएः नातिन जी ताञ दो लो ताना।	उनके लिए मेरा जी जल रहा है

★★★

28. आना सोंगिको, दोलाबु सामपोड़ेना — सखियों, चलो तैयार हो जाएँ

आना सुंगिको, दोलाबु सामपोड़ेना	सखियों, चलो तैयार हो जाएँ
बाआबु गालाङा	हम फूल पिरोएँ
तिसिङ गातिञ हिजुःआ	आज मेरे प्रिय आने वाले हैं
बाआबु गालाङा।	हम फूल पिरोएँ
आना सुंगिको, दोलाबु रेआड़ेन	सखियो, चलो हम नहाने जाएँ
बाआबु गालाङा	हम फूल पिरोएँ
सांगाञ बाआतेबु तोपाइआ	अपने संगी को फूलों से लाद दें
बाआबु गालाङा।	हम फूल पिरोएँ
आना सुंगिको, सोबेनतेबु तालाइआ	सखियों, हम उन्हें बीच में करेंगे
बाआबु गालाङा	हम फूल पिरोएँ
सांगाञ चाओंअर तेबु टापाइआ	हम उनपर चंवर डुलाएँगे
बाआबु गालाङा।	हम फूल पिरोएँ
आना सुंगिको, ओड़ोः काबु बागिआ	सखियो, हम उन्हें और नहीं छोड़ेंगे
बाआबु गालाङा	हम फूल पिरोएँ
बुदु बाबु लोः किङ हिजुःआ	वे बुदु बाबू के साथ आएँगे
बाआबु गालाङा।	हम फूल पिरोएँ

29. सेन लेनाञ मथुराते — मैं मथुरा गई थी

सेन लेनाञ मथुराते	मैं मथुरा गया था
हि:आ कानाञ इनाते हो	मैं वहीं से आ रहा हूँ
आन रेआ: नीला खेला जोतोञ लेलकेना	मैं वहाँ का लीला खेल सारा देख आया हूँ
प्रभु दोरे गोमके जाना	प्रभु स्वामी बन गए
कुबुजि कुड़ि रानी जाना	(और) कुब्जी रानी बन गई
ब्रजरेन कन्हाइ ताबुइ: राजा जाना	हमारे ब्रज के कन्हाई राजा बन गए
आञ दोञ लेल केना।	मैं तो देख आया
रुतान को रुताना	बजाने वाले बजा रहे हैं
सुसुन तानको सुसुन ताना	नाचने वाले नाच रहे हैं
दिसुम रेन होड़ोको जोतोको हिआकाना	देश के सारे लोग आए हुए हैं
बामाड़ें गोसाञ को दुबा काना	ब्राह्मण, गोसाईं बैठे हुए हैं
पोथि पांजिको लेल ताना	और पोथी पंजी देख रहे हैं
दारवान सिपाई को तिंगुआ काना	दरवान सिपाही खड़े हैं
आञ दोञ लेल केना।	मैं तो देख आया
रुतु, माला बांका चुड़ा	बाँसुरी, माला और बांका चूड़ा
इनाको जोतो दोआ काना	वह सब रखा हुआ है
टोपी सोनो: ते किङ सिंगारा काना	वह टोपी कुर्त्ता से सजे हुए हैं
पांति रे किङ दुबा काना	वे साथ बैठे हुए हैं
साएते किङ लेपेल ताना	तिरछी नजरों से देख रहे हैं
सालु सुगा लेका किङ जुड़िआना	सुग्गों की तरह उनकी जोड़ी है
आञ दोञ लेल केना।	मैं तो देख आया
आगो राधा विनंदिनी	हे राधा, विनन्दिनी
काए: हिजु:आ नीलमनि	(अब) नीलमणि (वापस) नहीं आएँगे
ने दुकु कुड़ाम बितार जी रे रुडुङताना	यह दुख छाती में कूट रहा है
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं कि
मोलोङ ताबु चाटा: जाना	हमारा भाग्य फूट गया
इआम-इआम तेञ हिजाकाना	मैं रोते-रोते आ रहा हूँ
आञ दोञ लेल केना।	मैं तो देख आया

★★★

30. नालिता सुंदुरि दुति — हे ललिता, हे सुंदरी

नालिता सुंदुरि दुति	सखि, सुन्दरी ललिता
राजा जानाए: ब्रज पाति	ब्रजपति राजा हो गए
इना काजि आलोम काजिआञ	वह बात मुझ से न कहो
इना काजि आएओमते	वह बात सुनकर
जी हो ओटाङतान।	मेरा जी उड़ जाता है
आदोङ काजि आएओमलेन	मैंने आधी बात ही सुनी थी
आदोङ दोरे पोचो जाना	अच्छी तरह से सुन भी नहीं पायी
इना काजितेञ बाउल गिड़िजान	उस बात से मैं चिंतित हूँ
इना काजि आएओमते	वह बात सुनकर
जी हो ओटाङ तान।	मेरा जी उड़ जाता है
आञ दो होञ उडु: लेदा	मैं तो सोच रही थी
मोदते पे हिजु:आ	(कि) तुम उनके साथ ही आओगी
इना काजि कागे होबाजान	वह बात नहीं हो पाई
इना काजि आएओमते	वह बात सुनकर
जी हो ओटाङ जान।	मेरा जी उड़ जाता है
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं (कि)
निआ काजि ताइजाना	यह बात (सदा के लिए) रह गई
वेद रे ओला कान	(यह बात) वेद में भी लिखा हुआ है
इना काजि आएओमते	वह बात सुनकर
जी हो ओटाङ तान।	मेरा जी उड़ जाता है

☆☆☆

31. सामाड़ोम लेकान राधा ताञ — मेरी सोने सी राधा

सामाड़ोम लेकान राधाताञा:	हमारे सोने-सी राधा
माएला गिड़ि जाना	बिल्कुल मुर्झा गई
नालिता चमपाक लाता	हे ललिता, चम्पकलता
देओड़ां रागि बेन	जाओ वैद्य को बुला लाओ
जू ना आञ दोञ कुंकि गिड़िजान।	जाओ, मैं तो पागल हो गई

सुनुम सासाङ को ताएआः	तेल, हल्दी, उसके (शृंगार के सामान)
ओतेरे दुला काना	जमीन पर बिखरे हुए हैं
एन लेकान सुगाड़ा ताञाः	हमारी वैसी सुन्दरी सखी
ओतेरेः बाटिआ काना	जमीन पर लेटी हुई है
जू ना आञ दोञ कुंकि गिड़िजान।	जाओ, मैं तो पागल हो गई
जीदाकाना चिः गोएः जाना	जीवित है या मर गई
दाः ना आनुइबेन	सखि, उसे पानी पिलाओ
हासुआना चि दुकुआना	कौन-सा दर्द है, कौन-सा दुःख है?
मारना लेलिः बेन	जाओ पता लगाओ
जू ना आञ दोञ कुंकि गिड़िजाना।	जाओ, मैं तो पागल हो गृई
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं
रानु रिदाइबेन जू ना	जाओ, दवा पीसो
हारे कास्टो किस्टो मेनते	हरे कृष्ण, हरे कृष्ण कहकर
रानु आनुइबेन	उसे दवा पिलाओ
जू ना आञदोञ कुंकि गिड़िजाना।	जाओ, मैं तो पागल हो गई

☆☆☆

32. कुबुजि रानी इदि किःआ — कुब्जी रानी उन्हें ले गई

कुबुजि रानी इदि किःआ	कुब्जी रानी (उन्हें) ले गई
ने जोनोमरे दुकु किःञा	उसने मुझे इस जन्म में दुखी किया
एन नागर हेड़ेम सागर	उस नागर, सुख-सागर की याद
जी रे रुडुङ ताना	मन में कूट रही है
हिआतिङते जी जालातिङ ताना।	चिंता से मेरा जी उड़ रहा है
हाए बिधिम चिका किःञा	हाय, विधि तुमने क्या किया?
ने जोनोमरेम नेका किःञा	मुझे इस जन्म में ऐसा किया?
निदा सिंगि आगो दुति	मुझे रात-दिन हे सखि,
नुबाः लेलोः ताना	अंधियारी दिखाई देती है
हिआ तिङते जी जालातिङ ताना।	चिंता से मेरा जी उड़ रहा है

नेका मेनते काञ ठोओराना	ऐसा होगा, यह मैं नहीं सोची थी
आञो होनाङ आए: लो: सेना	(नहीं तो) मैं भी उनके साथ जाती
सोबेन सुकु बुरु लेका	सारा सुख पहाड़ की तरह
आनरे दुला काना	वहीं ढाला गया है
हिआतिङते जी जालातिङ ताना।	चिंता से मेरा जी उड़ गया है
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं
इना दुकु ताइ जाना	कि वह दुख (सदा के लिए) रह गया
ने घाड़ि कुबुजि कुड़ि	इस समय कुब्जा छोरी
आए:गे सुगाड़ा जाना	वही सुन्दर बन गई
हिआतिङते जी जाला तिङ ताना।	चिंता से मेरा जी उड़ रहा है

☆☆☆

33. इआम–इआम काजि ताना (राधा) रोती हुई कह रही है

इआम–इआम काजि ताना	रोती रोती कह कही है
सोती श्रीमती	सती श्रीमती (राधा)
आगो दुति	हे सखि
पोचो जाना सुंगुति	हमारी संगति छूट गई
आगो दुति।	हे सखि
दुकु सुकु चाबा जाना	दुख–सुख खत्म हो गया
ताइ जाना श्रीमती	केवल (मैं) श्रीमती रह गई
आगो दुति	हे सखि
आतु जाना पिरिति	हमारी प्रीत बह गई
आगो दुति।	हे सखि
चि मेनते चिका जाना	कैसे? क्या हो गया?
हाड़ां जानाए: भागबती	(कि) भगबती (देवी) रूठ गईं
आगो दुति	हे सखि
बागे कि:आए: जी हिति	मेरे मन–मीत ने मुझे छोड़ दिया
आगो दुति।	हे सखि
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं
ललिता सुंगुति	सखि ललिता से
आगो दुति	हे सखि
ओलाकाना ने रीति	प्रेम की यही रीति लिखी हुई है
आगो दुति।	हे सखि

34. आम नातिन आञदो गातिञ — प्रिये, मैं तो तुम्हारे लिए

आम नातिन आञदो गातिञ	हे प्रिय तुम्हारे लिए
मेददाः जोरो ताना हो	मेरे आँसू बरस रहे हैं
गातिञ आमदो गातिञ	हे प्रिय, तुम्हें तो
कारेम हिआतिञ दो।	मेरी चिंता ही नहीं है
जी ताञ दो हिआतिङते	दुःख से मेरा दिल
दिदि लेका जालातिङ ताना	गिद्ध की तरह उड़ता–फिरता है
गातिञ ने सोमाए रे	हे प्रिय, ऐसे समय में
ने हिआतिङ दो।	ऐसी चिंता आ गई है
इसु दिनाते काञ जोमान	मैंने बहुत दिनों से खाना छोड़ दिया है
निदा सिंगि जी जुल ताना	रात–दिन जी जलता रहता है
गातिञ आमदो गातिञ	हे प्रिय, तुम्हें तो
कारेम साएआद जाःञ दो।	मेरी खबर ही नहीं है
निआः उड़ुः ताइजान	यह चिंता रह गई
दिन–दिन सोबेन दिन	सब दिन के लिए
गातिञ बुदु बाबु	हे प्रिय, बुदु बाबू
दुराङ बाइतान दो।	गीत बना रहे हैं

☆☆☆

35. सेन लेनाञ सिब माण्डापते — मैं शिव मंडप गया था

सेन लेनाञ सिब माण्डापते	मैं शिव मण्डप गया हुआ था
एन बोंगा सेबा मेनते	उस देवता की सेवा करने
आहो गोमके होसोड़ो काजि	हे प्रिये, झूठ कहना
का होञ इतुआना	मैं नहीं जानता
इपाएः काजिकोम काजिताना	तुम व्यर्थ ही मुझे दोष दे रही हो
गोमके बिङतेञ किरिआना	प्रिय, मैं सांप की शपथ लूँगा
इपाएः काजिकोम काजि ताना।	तुम व्यर्थ ही मुझे दोष दे रही हो
होड़ोको दोरे होसोड़ोमेआ	लोग तुम्हें बहकाते हैं
इना चिरेम पातिआना	क्या तुम उसपर चलोगी?
आमाः किरिआ आहो गातिञ	हे प्रिये, तुम्हारी कसम, मैं
का होञ सेनाकाना	कहीं नहीं गया था
इपाएः काजिकोम काजि ताना	तुम व्यर्थ ही मुझे दोष दे रही हो
गोमके बिङतेञ किरिआना	प्रिय, मैं सांप की शपथ लूँगा
इपाएः काजिकोम काजिताना।	तुम व्यर्थ ही मुझे दोष दे रही हो

बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं (कि)
दिनाकि होञ सेबा ताना	मैं रोज तुम्हारी सेवा करता हूँ
आम नातिन आहो गातिञ	प्रिये, तुम्हारे लिए ही तो
आञ दोञ जीदा काना	मैं जीवित हूँ
इपाए: काजिकोम काजिताना	तुम व्यर्थ ही मुझे दोष दे रही हो
गोमके बिङतेञ किरिआना	प्रिये, मैं सांप की शपथ लूँगा
इपाए: काजिकोम काजिताना।	तुम व्यर्थ ही मुझे दोष दे रही हो

☆☆☆

36. आम नातिन दो — तुम्हारे लिए

आम नातिन हो	हे प्रिये तुमाहारे लिए
दिसुम-दिसुम सांगाञ जुगिकेना	मैं देश-देश योगी बन फिरा
गातिञ नाम-नाम तेञ नामाना	प्रिये, मैंने तुम्हें खोज पाया है
सांगाञ दाड़ां-दाड़ां तेञ पिचाना	मैंने तुम्हें ढूँढ़ निकाला है
आहो गातिञ कारेञ बागे मेआ	प्रिये, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
सुगाड़ा-सुगाड़ा ताञ गातिञ दो	मेरी सुन्दर साथिनी
हेरेल-हेरेल ताञ सांगाञ दो।	मेरी प्यारी संगिनी
आम नातिन हो	हे प्रिये, तुम्हारे लिए
बिङ बिसि होञ बिसि लेना	मुझे सांप का विष लगा था
गातिञ माउतु तेबा: लेना	मेरी मौत आई थी
सांगाञ गोनोए: सेटेर लेना	मेरा अन्त आया था
आहो गातिञ कारेञ बागे मेआ	प्रिये, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
आमा: उमबुलतेञ जीदा काना	मैं तुम्हारी छाया में जीवित हूँ
आमा: दानाङ तेञ बानचाओआ काना।	तुम्हारी आड़ में रक्षित हूँ
आम नातिन हो	हे प्रिये, तुम्हारे लिए
हुड़िङ माराङ जोलाञ पारोम केना	मैंने छोटे-बड़े चढ़ान पार किए हैं
गातिञ ओकोकोरे होम उकुकेना	प्रिये, तुम कहाँ छिपी थी
सांगाञ चिमाए कोरे होम जापा:केना	तुम कहाँ सटी थी
आहो गातिञ कारेञ बागे मेआ	प्रिये, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
होपोर जापा:रे दुबाकान मे	आओ नजदीक बैठे रहो
ताड़ाए मेदरे होञ लेलाकान मे।	मैं तुम्हारे कमल नयन देखता रहूँ

आम नातिन हो	हे प्रिय, तुम्हारे लिए
सिरमारेन सिङ बोंगाञ आगोम केना	मैंने भगवान से प्रार्थना की थी
गातिञ इनाते होञ नाम ताद मे	प्रिये, मैंने तब तुम्हें पाया है
सांगाञ इनाते होञ पिचाताद मे	तब तुम्हें मिल सका हूँ
आहो गातिञ कारेञ बागे मेआ	प्रिये, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
बुदु बाबु दुराङ ताना	बुदु बाबू गीत गा रहे हैं
काटा इतिर हो हाएआ ताना।	(कि) मुझे तुम्हारे पैर दबाने की इच्छा हो रही है

☆☆☆

37. पिरिथि रेलाङ जोनोमा काना — हम पृथ्वी पर जन्मे

पिरिथि रेलाङ जोनोमा काना	इस पृथ्वी पर हम दोनों का जन्म हुआ
सिंगि चाण्डुः होलाङ तुराकाना	हम सूरज, चांद की तरह उगे हुए हैं
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी कसम, मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा
नीला खेला इनुङालाङ मोसाते	हम सारा क्रीड़ा-कौतुक एक साथ करेंगे
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी सौंगध, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
सुगाड़ा कारेञ राड़ा मेआ।	प्रिय, नहीं छोड़ूँगा।
चेड़ें लेका लाङ जुड़िआ काना	पक्षी के समान हमदोनों की जोड़ी हुई
बा लेका होलाङ आला काना	और फूल के समान हम खिले
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
जीरे-जीरे थोलाकाना मेड़ेंदते	(हम दोनों का) जी लोहे से बंधा हुआ है
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी सौगंध, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
सुगाड़ा कारेञ राड़ामेआ।	प्रिय, नहीं छोड़ूँगा।
आम नातिन आञ दो गातिञ	प्रिय, मैं तो तुम्हारे लिए
बाउला लेका होञ बुला काना	पागल-सा हो गया हूँ
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी कसम, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
जीदा काना लाङ गोजोआलाङ मोसाते	हम (साथ) जा रहे हैं (और) साथ ही मरेंगे
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी सौगंध, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगां
सुगाड़ा कारेञ राड़ा मेआ।	प्रिय, नहीं छोड़ूँगा।
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं
निआ काजि होञ सुकुजाना	(कि) यह बात अच्छी लगी
आमाः किरिआ कारेञ बागेमे	तुम्हारी कसम, तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
दोला राधा वृन्दा बिरते होनोरते	राधा, चलो हम वृन्दावन घूम आएँ
आमाः किरिआ कारेञ बागे मेआ	तुम्हारी सौगंध, तुम्हें नहीं छोड़ूँगा
सुगाड़ा कारेञ राड़ामेआ।	प्रिय, नहीं छोड़ूँगा।

****

रामायणपाला के गीत

****

1. जामबुबाने: काजि ताना — जामवन्त कह रहे हैं

जामबुबाने: काजि ताना	जामवन्त कह रहे हैं
जोतो गाड़ि सेनो: पे	वानरो, तुम सभी जाओ
हासा दिरि बुरुआगुते	मिट्टी पत्थर और पहाड़ लाने के लिए
सामुनदार तोलेआबु इनाते	हम उससे समुन्दर बांधेंगे
राम लखन प्रभु हुकुमते।	प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से
सोबेन बीर को खुस जाना	सभी वीर प्रसन्न हुए
इना काजि आयोमते	यह बात सुनकर
सेनो:आबु सोबेन लांकाते	हम सभी लंका जाएंगे,
लेलेआबु लाङकापुरि मेदते	(और) अपनी आँखों से लंकापुरी देखेंगे
राम लखन प्रभु हुकुमते।	प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से
जेताए बीरे: खुड़िल ताना	कोई कोई वीर उछल रहे हैं
दोला-दोला मेनते	चलो, चलो कहते हुए
सेनो:आबु उत्तर दिसुमते	हम उत्तर दिशा की ओर चलेंगे
आगुइआबु बुरु दिरि बोओ:ते	(और) पत्थर पहाड़ सिर पर लाएँगे
राम लखन प्रभु हुकुमते।	प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से
हानुबीरे: बिरिद जाना	वीर हनुमान उठें
राम-राम मेनते	राम राम कहते हुए
उत्तर दिसुम बुरु आगुते	(और) पत्थर लाने के लिए उत्तर की ओर चले
बुदुबाबु दुराङ ताना इनाते	इसी पर बुदु बाबू गीत गा रहे हैं
राम लखन प्रभु हुकुमते।	प्रभु राम-लक्ष्मण की आज्ञा से

☆☆☆

2. जेताए बुरु जेताए दिरि — कोई पहाड़, कोई पत्थर

जेताए बुरु जेताए दिरि	कोई पहाड़ और कोई पत्थर
दुपिलाना को जोतोगाड़ि	सभी वानर सिर पर लिए हुए हैं
मोदरे हुनडिन जान	सभी इक्ट्ठे हो गए
घाड़ि-घाड़ि सोबेन गाड़ि	बार बार सभी वानर
रामगे: नुतुम तान	राम का ही नाम ले रहे हैं
बीर को बिरको आगु तान।	(सभी) वीर पहाड़ ला रहे हैं

जेताए बीरेः सुसुन ताना	कोई वीर नाच रहा है
जेताए जेताए लानदा ताना	कोई कोई हँस रहे हैं
खुसते हिजुःतान	(सभी) प्रसन्न होकर आ रहे हैं
दोला दोला दोलाबु भाइ	चलो चलो चलो
मेनतेः काजि ताना	कहते हुए चल रहे हैं
बीर को बिरको आगुतान।	सभी वीर पहाड़ ला रहे हैं
मुइःलेका को सेनोः ताना	वे चीटियों के समान चल रहे हैं
रिमाबिल लेका (को) लेलोः ताना	(और) बादल के समान दिखाई दे रहे हैं
बीरको हिजुः तान	(सभी) वीर आ रहे हैं
सिङ बोंगाः उमबुलते भाइ	वे भगवान की परछाई से
दापाल गिड़िजान	ढंक गए हैं
बीर को बिरको आगुतान।	(सभी) वीर पहाड़ ला रहे हैं
सोबेन बीर को सेटेर जाना	सभी वीर पहुँच गए
गोटा दिसुम उमबुल जाना	सम्पूर्ण देश (उसकी) छाया से ढक गया
नुबाः लेलोः तान	चारों ओर अंधियारी छा गई
बुदु बाबु लेलते ताबु	बुदु बाबू यह देख कर
दानदा गिड़िजान	आश्चर्य में पड़ गया
बीरको बिरको आगु तान।	वीर पहाड़ ला रहे हैं

☆☆☆

3. रघुबरेः खुसजाना — रघुवीर खुश हुए

रघुबरेः खुसजाना	रामचन्द्र जी खुश हो गए
नाल नील हुकुम केना	उन्होंने नल नील को आज्ञा दी
सामुनदार तोलतेः बिरिदजान	वे दोनों समुन्दर बांधने उठे
बीर किङ सेनोः जान	वे दोनों वीर चले गए
दाः चेतान रेकिङ तिङगुन जान।	(और) पानी के ऊपर खड़े हो गए
बीर बिरको तुल ताना	वीर पहाड़ उठा रहे हैं
बुरु दिरि ओम ताना	पहाड़ और पत्थर दे रहे हैं
लेंगा तीतेः नाल नील तेला तान	नल नील बाएं हाथ से (उसे) ले रहे हैं
बीर किङ तोलेतान	वे दोनों वीर (समुन्दर) बांध रहे हैं
दाः चेतान बुरु उपाल तान।	पानी के ऊपर पहाड़ तैर रहे हैं

सोबेन बीर को भाकुआओ जाना	सभी वीरों को आश्चर्य हुआ
लेंगाती तेः तेला ताना	कि (नलनील) बाएँ हाथ से ले रहे हैं
हानु बीर मोनरेः गोसा जान	(यह देख) वीर हनुमान को गुस्सा आया
बीर किङ तोले तान	वीर (नलनील) समुन्दर बांघ रहे हैं
सामुनदार होरा बाइतान।	वे समुद्री रास्ता बना रहे हैं
हानुबीर खींस जाना	वीर हनुमान बिगड़ गए
उत्तर दिसुमतेः रुआड़ा जाना	(और) उत्तर दिशा की ओर लौट गए
माराङ माराङ बुरु कोएः पाटुबतान	वे बड़े-बड़े पहाड़ उखाड़ रहे हैं
बीर किङ तोले तान	वीर (नल-नील) समुन्दर बांध रहे हैं
बुदु बाबु दुराङ बाइतान।	बुदु बाबू गीत बना रहा है

☆☆☆

पायार :-

4. हानु बीरेः खींस जाना — बीर हनुमान क्रोधित हुए

हानु बीरेः खींस जाना	वीर हनुमान बिगड़ गए
उत्तर दिसुमतेः रुआड़ा जाना	वे उत्तर दिशा की ओर लौट गए
माराङ माराङ बुरुकोएः पाटुबताना	वे बड़े-बड़े पर्वत उखाड़ रहे हैं
ऊद लेकाएः तुदतान	(पहाड़ों को) वे खुखड़ी के समान उखाड़ रहे हैं
सालुकिद लेकाएः चापाद तान	(और) कुमुद फूल की तरह रौंद रहे हैं
बुरु चेतान बुरु तिरिङ तान।	पहाड़ पर पहाड़ लाद रहे हैं
ओकोए बुरु दुपिलाना	कुछ पहाड़ों को वे सिर पर लिए हुए हैं
ओकोए बुरु माला काना	कुछ का उन्होंने माला की तरह लटका रखा है
ऊब-ऊबते बुरु होएः तोलाकान	उन्होंने सारे बालों में पहाड़ बांध लिया है
हानु उपुन हिसि लाख बुरुहोएः आगुतान	हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं
बीर उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान	वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं
भयांकरेः मूर्तिन जाना	भयानक रूप धारण कर
हानु बीरेः बिरिद जाना	हनुमान तैयार खड़े हो गए
नाल नील खींसते बुलाकान	(यह देख) नलनील क्रोध से तिलमिलाए हुए हैं
हानु उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान	हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं
बीर उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान	वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं

खींस ते बीरेः हिजुःताना	वीर क्रोधित होकर आ रहे हैं
उपुन कोसरेः मानडा ताना	और चार-चार कोस पर अपना कदम रख रहे हैं
होयो गामा लेका साड़ितान	आंधी पानी की तरह आवाज हो रही है
हानु उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान	हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं
बीर उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान।	वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं
रामदाल बीर को काजिताना	राम के दल के वीर कह रहे हैं—
ओको बीरेः हिजुःताना	कौन वीर आ रहा है
बुदु बाबु राम-गुन दुराङतान	बुदु बाबू राम-गुण गा रहे हैं
हानु उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान	हनुमान अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं
बीर उपुन हिसि लाख बुरु होएः आगुतान	वीर अस्सी लाख पहाड़ ला रहे हैं

☆☆☆

5. हानु बीरेः आयोम केना — वीर हनुमान ने सुना

हानु बीरेः आयोम केना	हनुमान ने सुना
सोड़ोको दोरे तेआरजाना	(कि) रास्ता तैयार हो गया
होयो होन एनरेः तिंगुन जान	पवन पुत्र उन पर खड़े हो गए
खींस ते साराः चांकि केना	और क्रोध से कूद पड़े
चाङकि केआतेः कोटानजान	उछलकर उन्होंने अपना शरीर झकझोरा
बुरु चेतान बुरु थेर तान	(जिससे) पहाड़ पर पहाड़ फेंका जाने लगा
सोबेन गुनडा गिड़ि जान	(और) सब कुछ टूट-फूट गया
हुहुङकारेः साबदे केना	(हनुमान ने जब) हुंकार शब्द किया
सोबेन बीर को छानद जाना	तब सारे वीर स्तब्ध हो गए
बोंगा होड़ो बिङ को एकेलातान	सभी देवता और नाग डर से कांपने लगे
चिका जाना चिका जाना	क्या हुआ, क्या हुआ
मेनते सोबेन काजि तान	कहकर सब पूछने लगे
चामातकार सुइन रे साड़िजान	शून्य (आकाश) में चमत्कार से आवाज हुई
लुतुर तालि गिड़ि जान।	(जिससे) कान सुन्न हो गए
जेताए जेताए काजिताना	कोई-कोई कह रहा है
बुरु बोंगा ओड़ां जाना	(कि) पर्वत देवता बिगड़ गए हैं
चाउलि जाङरे आएःगे नामाकान	शकुन में वही दिखाई दे रहा है
जेताए जेताए काजि ताना	कोई-कोई कह रहा है
ओको बीर गारजान केन	कि कोई वीर गर्जन कर रहा है
जेताए जेताए सुइन रे साड़िजान	कोई कह रहा है—शून्य में आवाज हुई
मेनते सोबेन काजि तान।	ऐसे ही सभी कह रहे हैं

निआ काजि कुलि मेनते	इस बात को पूछने के लिए
सेनो:आबु राज दुआरते	हम राज द्वार चलेंगे
बामड़ें मुनि राजाको दुबा कान	वहाँ ब्राह्मण, मुनिगण और राजा बैठे हुए हैं
लेलतानाको पोथि पांजि	और पोथी पंजी देख रहे हैं
आयुमेआबु निआकाजि	हम सभी यह बात सुनेंगे—
मेनते बुदु बाबु सेनो:जान	कहकर बुदु बाबू भी वहाँ चले गये
मोनरे दिलरे: खुस जान	और अपने मन और दिल में खुश हुए

☆☆☆

6. श्री रघुवर ओड़ो:वीर लोखोन कुंआर — श्री राम रघुवर और लक्ष्मण कुमार

श्री राम राघुवार	श्री राम रघुवर
ओड़ो: वीर लखन कुँआर	और वीर लक्ष्मण कुमार—
बारहागा बीर किङ हिआकान	दोनों वीर बन्धु आए हुए हैं
सिब बोंगा थापना मेनते	शिव की स्थापना के लिए
हिआ कानाकिङ सोड़ोको मुंडिते	वे सड़क की छोर पर आए हुए हैं
हारे,हारे,हारे, किङ नुतुम ताना।	(और) 'हरे हरे' बोल रहे हैं

राङ :–

बोंगा मुनि बीरको दुबाकान	वहाँ देवता, मुनि और वीर बैठे हुए हैं
राम लखन सिबकिङ सेबातान	(और) राम–लक्ष्मण शिव की पूजा कर रहे हैं
घाड़ि घाड़ि घाड़ि	वे हर घड़ी, बार–बार
बोओ: चेतान मुड़ि	शिव जी के सिर पर
माधु गूड़ु किङ दुलेताना हो	मधु और गुड़ डाल रहे हैं
आहो बुरु आबा सिब बोंगा	हे गुरु पिता, हे शिव देवता
मेनते सेबा ताना हो	कह कर पूजा कर रहे हैं
आहो बुरु आबा सिब बोंगा।	हे गुरु पिता, हे शिव देवता
आम प्रभु श्री भोगोमान	आप ही श्री भगवान हैं
आमा: उमबुल ते होञ जीदाकान	आप की कृपा से ही हम जी रहे हैं
भुवान माण्डाल	इस भू मण्डल में
चेतानो पाताल	आकाश और पाताल में
सोबेन को इतुआना हो	सभी आप को जानते हैं
आहो गुरु आबा सिब बोंगा	हे गुरु पिता, हे शिव देवता
मेनते सेबा ताना हो	कह कर वे पूजा कर रहे हैं
आहो गुरु आबा सिब बोंगा।	हे गुरु पिता, हे शिव देवता

निआ काजि प्रभुञ बिनतितान	प्रभु, मैं एक बात की प्रार्थना कर रहा हूँ
आञा: मोन आसा पुरनो ताम	(कि) मेरे मन की आशा पूर्ण कर दो
देवी सीता साति	देवी सती सीता को
लाङकापुर पाति	लंका के पति
इदि तिआए: रावान हो	रावण ने चुरा लिया है
अहो गुरु आबा सिब बोंगा	हे गुरु पिता, हे शिव देवता
मेनतो सेवा ताना हो	कह कर पूजा कर रहे हैं
आहो गुरु आबा सिब बोंगा।	हे गुरु पिता, हे शिव देवता
बुदु बाबु ताबु दुराङ तान	बुदु बाबू गीत गा रहे हैं
ताड़ाए काटा ताला रे सारनाइना	(और) राम के चरणों में शरण लिए हुए हैं
सामाड़ोंम लाङका पुरि	हम स्वर्ण लंका को
एन सीता सुनदोरि	उसी सीता सुन्दरी का
पिचाले सेनो: ताना हो	पीछा करने के लिए जा रहे हैं
आहो गुरु आबा सिब बोंगा	हे गुरु पिता, हे शिव देवता
मेनते सेबा ताना हो	कह कर पूजा कर रहे हैं
आहो गुरु आबा सिब बोंगा।	हे गुरु पिता, हे शिव देवता

☆☆☆

पायार :–

7. राम लोखोन किङ दुबाकाना– राम लक्ष्मण बैठे हैं

राम लखन दुबजान	राम लखन बैठे हुए हैं
मंत्री जातारा लेलतान	(और) मंत्री जामवन्त शकुन देख रहे हैं
सोबेन बीर को माहाखुस जान	सभी वीर बहुत खुश हुए
नुतुमे आबु राम राम मेनते	हम राम का नाम लेकर
सेनो:आबु कुलि कुलिते	रास्ता पूछते हुए चलेंगे
सोबेन बीर को निआगे काजितान।	सभी वीर यही कह रहे हैं

राङ :–

सोबेन बीर को सामपोड़ेन जान	सभी वीर तैयार हो गए
हानुबीरे: बिरिद जाना	वीर हनुमान (भी) उठ गए
राम राम मेनते	राम राम कहते हुए
दो भाइ दो भाइ लाङकाते	चलो लंका को चलें
राम राम मेनते।	राम राम कहते हुए

आयार तायोम सोबेन बीर	सभी वीर आगे पीछे चल रहे हैं
एन बितार रे राघुबीर	(और) उनके बीच में रामचन्द्र जी हैं
राम–राम मेनते	राम का नमा लेते हुए
सीता साति पिचाते	वे सती सीता की खोज में चले
राम राम मेनते।	राम राम कहते हुए
जेताए बीरेः खुड़िल तान	कोई कोई वीर उछल रहा है
जेताए जेताए साबाकाना	कोई कोई एक दूसरे को (हाथ में) धरा हुआ है
राम राम मेनते	राम राम कहते हुए
सुसुन तानाको मोसाते	सभी एक साथ जा रहे हैं
राम राम मेनते।	राम राम कहते हुए
रामायण रे ओलाकाना	रामायण में (जो कुछ) लिखा हुआ हैं
बुदु बाबु दुराङ ताना	उसी को बुदु बाबू गा रहे हैं
राम राम मेनते	राम राम कहते हुए
सेटेर जाना को लाङकाते	वे (वीर) लंका पहुँच गए
राम राम मेनते।	राम राम कहते हुए

☆☆☆

8. जामबुबानेः काजिताना — जाम्बवन्त कह रहे हैं

जामबुबानेः काजि ताना	(मंत्री) जामवन्त कह रहे हैं
हातु मुलि काबु सेना	(कि) हम गांव के नजदीक नहीं जाएंगे
एलारे दोलारे	हे भाई, हे भाई
लाङकापुरी काठिनान दिसुम दो।	लंकापुर बहुत भयानक देश है
आसुर तेगे दिसुमाना	वह असुरों से ही भरा हुआ है
रावान राजाएः राजाकाना	(और) रावण उनका राजा है
एलारे दोला रे	हे भाई, हे भाई
बोंगा बुरु काको मानातिङ दो।	वे देवी–देवता नहीं मानते
सादोम उरिः होड़ो गाड़ि	घोड़ा, बैल, मनुष्य, बन्दर
ओड़ोः मेरोम केड़ा मिंडि	और बकरी, भैंस और भेड़–
एलारे दोला रे	हे भाई, हे भाई
सोबेन जिलु सोबेन को जोमेतान दो।	वे सब प्रकार का मांस खाते हैं
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं
सोबेन बीर को गोसोजाना	(कि यह बात सुनकर) सभी वीर डर गए
एलारे दोला रे	हे भाई, हे भाई
जोतो गाड़ि हापे गिड़िन जान दो	सभी वानर बिल्कुल चुप हो गए

पायार :–

9. राधुबारेः काजिताना — रघुवर कह रहे हैं

राधुबारेः दुबाकाना	श्रीराम रघुवर बैठे हुए हैं
जामबु मंत्री काजि ताना	(और) मंत्री जामवंत कह रहे हैं
निआ काजि आञदोञ काजिताना	मैं यह बात बताना चाहता हूँ
अंगाद हानुमान	(कि) अंगद और हनुमान
सोबेन बीराते आकिङ माराङ जाना	सभी वीरों में वे श्रेष्ठ हैं
इना मेनते आकिङ सारदार जान	इसलिए वे दोनों हो सरदार बने

राङ :–

आयोमेपे हो	वीरो तुम सुन लो
सोबेन बीर को निआ काजि	सभी वीर यह बात
जे काजिते हिआ काना इना काजि	जिस बात के लिए हम आए हुए हैं
आञदोञ काजि ताना महाप्रभु कुदुमते	महाप्रभु की आशा से मैं यह कह रहा हूँ
अंगाद हानुमान	अंगद और हनुमान
सोबेन बीराते आकिङ सुबा जाना।	सभी वीरों में वे मूल निकले
सेनोआबु हो	हम सब चलेंगे
लाङकापुरी लाड़ाइ मेनते	लंकापुरी में लड़ाई के लिए
सामपोड़ेनेपे ताबु सिंगारेनपे	तुम तैयार हो जाओ, सज जाओ
मागिआबु हारिआबु दिसुम आतोमते	हम उस (रावण) को देश के बाहर मार भगाएंगे
अंगाद हानुमान	अंगद और हनुमान
सोबेन बीराते आकिङ सुबा जाना।	सभी वीरों में ये मूल निकले
खुस जाना हो	प्रसन्न हुए
सोबेन बीर को काजि आयोमते	सभी वीर सुनकर
खुड़िल ताना को रासिकाते	वे खुशी से उछल रहे हैं
दोला दोला दोला मेनते बिरिद जान	चलो, चलो, चलो कहते हुए वे एक साथ उठे
अंगाद हानुमान	अंगद और हनुमान
सोबेन बीराते आकिङ सुबाजाना।	सभी वीरों में मूल निकले
काजि तानाएः हो	कह रहे हैं
बुदु बाबु ताबु दुराङते	बुदुबाबू यही बात जीत में
हारिआबु दिसुम आतोमते	हम उस (रावण) को देश में बाहर करेंगे
दालिआबु मागिआबु सोबेन होन होपोनते	छोटे बड़े मिलकर, उसे हम मारेंगे, काटेंगे
अंगाद हानुमान	अंगद और हनुमान
सोबेन बीराते आकिङ सुबाजाना	सभी वीरों में वे मूल निकले

☆☆☆

पायार :–

10. भगवाने: काजिताना — भगवान कह रहे हैं

भगवाने: काजिताना	भगवान (श्रीराम) कह रहे हैं
इसु दिन बु होबा जाना	(कि) हमारे आये बहुत दिन बीत गए
आसुर दुसमान को काको लेलो: ताना	(फिर भी) दुश्मन असुर दिखाई नहीं देते
इलि जिलु को जोम तान	मांस मदिरा खाते हैं
निदा सिंगिको बुलाकान	दिन–रात मस्त रहते हैं
आबु हिआ काना: काको इतुआन	हमारे यहाँ आने का इन्हें पता तक नहीं है

राङ :–

अंगाद बीरे: दुबाकाना	वीर अंगद बैठा है
जामबु मंत्री काजि ताना	(और) मंत्री जामवंत कह रहा है
बाबु सामपोड़ेन में	हे बाबू तैयार हो जाओ—
सामोड़ोंम लाङकापुरीते जूहो सेनो: में	तुम सोने की लंकापुरी को जाओ
बाबू आमहो सेनो: मे।	हे बाबू तुम चले जाओ
इसु दिन बु होबा जाना	हम लोगों के आये बहुत दिन हो गए
जेताए काको इतुआना	(किन्तु) इस बात को कोई नहीं जानता
बाबु सामपोड़ेन मे	हे बाबू तैयार हो जाओ
राजा दोरोजाते एनते सेनो: मे	तुम राजा के दरवाजे पर हो आओ
बाबु आमहो सेनो: मे	हे बाबू, तुम चले जाओ
सीता देवी ओकोरिआ	सीता देवी कहाँ है?
मेना:इआ चि बाङगा:इआ	है या नहीं है?
बाबु सामपोड़ेन मे	हे बाबू, तैयार हो जाओ
आपान जोतो काजि कुड़िको कुलि मे	अपनी बातों का पता स्त्रियों से लगाओ
बाबु आमहो सेनो: मे।	हे बाबू, तुम चले जाओ
बुदु बाबु दुराङ ताना	बुदु बाबू गीत गा रहे हैं
अंगाद बीरे: सेनो: जाना	(कि) वीर अंगद चले गए
बाबु सामपोड़ेन में	हे बाबू तैयार हो जाओ
एनारेआ: नीला खेला सोबेन लेले मे	तुम वहाँ की लीला देख आओ
बाबु आमहो सेनो: मे	हे बाबू, तुम चले जाओ

☆☆☆

पायार :–

11. अंगाद बीरेः सेनोः जाना — भगवान कह रहे हैं

अंगाद बीरेः सेनोःजाना	वीर अंगद चला गया
लाङका पुरीः सेटेर जाना	वह लंकापुरी पहुँच गया
होन कुड़िको बोरोते निरतान	स्त्रियाँ और बच्चे डर के मारे भाग चले
माराङ होड़ोको काजि तान	बड़े लोग कह रहे हैं
ओड़ोः गाड़ि हिजुः लेना	(कि) बंदर फिर आया
राजा दोरोजातेः सेनोः तान।	(और) राजा के दरवाजे में जा रहा है

राङ :–

जे गाड़ि हिजुःलेना	जो बन्दर (पहले) आया था
लाङका पुरी ओंडोरे केना	(और) लंकापुरी को जला गया था
एन गाड़ि ओड़ोएः हिआकान	वही बन्दर फिर आया है
दो भाइ दोबु लेला	हे भाई, चलो देखें
राजा दोरोजारेः दुबाकान।	वह राजद्वार पर बैठा हुआ है
ओकोरे होएः चाङकि केना	वह कहाँ से उछला था
निमिन दूरातेः हिआकाना	(कि) हमारे देश में पहुँच गया
गाड़ि जाति काको बोरो तान	बन्दर की जाति बड़ी निडर होती है
दो भाइ दोबु लेला	हे भाई, चलो देखने चलें
राजा दोरोजारेः दुबाकान।	वह राजद्वार पर बैठा हुआ है
सीता देवीः आउ ताःइआ	वह (रावण) जो सीता देवी को लाया
नेसोकानेः चिकाबुआ	(इसके लिए) इस बार(यह बंदर) हमें क्या करेगा
सोबेन होड़ोको निआगे काजितान	सभी लोग इसी की चर्चा कर रहे हैं
दो भाइ दोबु लेला	हे भाई, चलो देखने चलें
राजा दोरोजारेः दुबाकान।	वह राजद्वार पर बैठा हुआ है
अंगाद बीरेः दुबाकाना	वीर अंगद बैठा हुआ है
बुदु बाबु दुराङ ताना	बुदु बाबू गा रहे हैं
बोरो बोरोते होड़ोको हिजुःतान	(कि) लोग डरते–डरते आ रहे हैं
दो भाइ दोबु लेला	हे भाई चलो देखने चलें
राजा दोरोजारेः दुबाकान।	वह राजद्वार पर बैठा हुआ है

पायार :–

मंदोदरी आयुम केना	(जब) मंदोदरी ने सुना
अंगाद बीरे: हिआकाना	(कि) वीर अंगद आया हुआ है
होड़ो गाड़िते दिसुम पेरे: जाना	(और) नर–वानरों से देश भर गया है
निआ काजि कुलि मेनते	(तब) इस बात को पूछने के लिए
सेनो: तानाए: राजा ता:ते	वह राजा (रावण) के पास जाता है
मंदोदरी रानी बिनति ताना।	(और) रानी मंदोदरी विन्ती करती है

☆☆☆

राङ :–

12. रावन राजाए: दुबाकाना — रावण राजा बैठे हुए हैं

रावान राजा बीर दुबाकाना	वीर रावण राजा बैठा हुआ है
मंदोदरी रानी बिनति ताना	(और) रानी मंदोदरी विनती कर रही है
आहो प्रभु गोमके लाङकेसार	हे प्रभु लंकेश्वर,
निआ काजि प्रभुञ आयुमाना	मैंने यह बात सुनी है
इना काजि गोमकेञ हिआकाना	इसी बात को कहने के लिए आई हूँ
कुड़ाम रोओड़ो ताना काजि आयुमते	इस बात को सुनकर मेरी छाती सूख रही है
हिआकानाए: राम लाङकाते	(कि) राम लंका आए हुए हैं
सीता साति देवी पिचाते।	और सती सीता की खोज कर रहे हैं
राम लखन ता:ते लाङकापाति	हे लंकापति, राम–लखन के पास
इदि तुकाइआलाङ कुलवाती	हम उस कुलवन्ती को पहुँचा दें
निआ काजि गोमके आञदोञ बिनतिताना	हे स्वामी मैं इसी बात की विनती कर रही हूँ
कालाङ प्रभु एपेराङा	(कि) हम उनसे झगड़ा नहीं करेंगे
योधा बीर को हिजा काना	बड़े–बड़े वीर योद्धा आए हैं
जी हो एकेला ताना काजि आयुमते	यह बात सुनकर हृदय कांप रहा है
हिआकानाए: राम लाङकाते	राम लंका आए हुए हैं
सीता साति देवी पिचाते।	और सती सीता को खोज रहे हैं
आए: हेके श्री भगवान	वे स्वयं प्रभु भगवान हैं
आएआ: नुतुम राघुबार राम	(और) उनका नाम रघुवर राम है
बोंगा, होड़ो, बिङ सोबेनको इतुआना	देवता, नर और नाग सभी इस बातको जानते हैं
सोरोगो मोनचो पाताल दिसुम	स्वर्ग पाताल और दुनिया के लोग
जोओप ताना को राम नुतुम	उनका नाम जपते हैं
आएआ: खुसतान बिनति भागति ते	वे भक्ति वन्दना से खुश होते हैं
हिआ कानाए: राम लाङकाते	राम लंका आए हुए हैं
सीता साति देवी पिचाते।	(और) सती सीता की खोज कर रहे हैं

नाल नील बीर जामबुबान	नल नील और वीर जामवन्त
जोतो गाड़ि को पेरे:आकान	सभी बंदर (लंका में) भरे हुए हैं
अंगाद बीर सिङ दुआर रे: दुबाकान	वीर अंगद सिंह द्वार पर बैठा है
बुदु बाबु ताबु दुराङ तान	बुदु बाबू गा रहा है
लाङ्का ओंडोर गाड़ि रुआड़ाकान	(कि) लंका जलाने वाला बन्दर फिर आया है
होड़ोको निरतान नुतुम आएओमते	लोग उसका नाम सुनकर ही भाग रहे हैं
हिआकानाए: राम लाङ्काते	राम लंका आए हुए हैं
सीता साति देवी पिचाते	और सती सीता की खोज कर रहे हैं

☆☆☆

13. रावान राजाए: लानदा केना — रावण राजा हँसने लगे

रावान राजाए: लानदा केना	रावण राजा हँस उठा
लानदा लानदाते: काजिताना	(और) हँसते-हँसते कहने लगा—
मनदोदरी आमदोम बोरोतान	मन्दोदरी, तुम जो डर रही हो
आञदोञ दानदाजान	इस बात से मुझे आश्चर्य हो रहा है
ओको बीर लाङ्काते: हिआकान।	कौन वीर लंका में आया है?
नाल-नील जोतो गाड़ि	नल नील जितने बन्दर हैं
जोमताम को बाकार कुड़ि	वे बेर खाते हैं
इनकु चिरे बीरेम काजितान	क्या तुम उन्हीं को वीर कहती हो?
आञदोञ दानदा जान	मुझे आश्यर्च हो रहा है
ओको बीर लाङ्काते: हिआकान?	(कि) कौन वीर लंका में आया हुआ है?
होड़ो गाड़ि सादोम मिंडि	आदमी, बन्दर, घोड़ा और भेड़
इना जिलु लो:ञ जोमतान मांडि	इन्हीं के मांस से तो हम भात खाते हैं
दिनाकि हो आमगेम उतु तान	प्रतिदिन तुम्हीं तो (उन्हें) पकाती हो
आञदोञ दानदाजान	मुझे आश्चर्य हो रहा है
ओको बीर लाङ्काते: हिआकान।	(कि) कौन वीर लंका में आया हुआ है?
बुदु बाबु बिनति जा:इआ	बुदु बाबू (रावण से) कह रहे हैं
कुड़ि काजि गोमके हेके निआ	कि हे प्रभु, यह औरतों की बात है
कुड़ि काजिते चिम बोरोताना	क्या तुम औरतों की बातों से डरते हो?
आञ दोञ दानदाजान	मुझे आश्चर्य हो रहा है
ओको बीर लाङ्काते: हिआकान?	(कि) कौन वीर लंका में आया हुआ है?

पायार :–

14. मनदोदरी रानी काजि ताना — मान्दोदरी रानी कह रही है

मनदोदारी रानी काजिताना	रानी मन्दोदरी कह रही है
रावान राजाए: कोंका जाना	(कि) रावण राजा पागल हो गया
काजि आयोमते आञ होञ कुंकिजान	(उसकी) बात सुनकर मैं भी पागल हो गई
जे प्रभु जोनोम ता:इआ	जिस प्रभु ने उसे जन्म दिया
होड़ो मेनते: का जिआ:इआ	उसी को वह मनुष्य कहता है
ठोओर केदाञ सेटेर जान।	मैं जान गई कि (उसकी) मौत आ गई है

राङ :–

बेएद रे ओला काना	(जो) वेद में लिखा है
एन दिन सेटेर जाना	वह दिन पहुँच गया
इनाते हिआ तिङ्ते आञदोञ बालाएतान	इसी चिंता में मैं चिंता में पड़ी हूँ
निदा सिंगि मेदाते मेद दा: जोरोतान।	रात–दिन आँखों से आँसू झर रहे हैं

पायार :–

रावान राजाए: खींस जाना	रावण राजा क्रोधित हो गया
सिङ दुआर रे दुब जाना	और सिंह द्वार पर बैठ गया
गेल मोचाते: काजितान	वह दसो मुख से एक साथ कहने लगा
मोलोङ ताबु फलाओ जाना	हमलोगों का भाग्य खुल गया
होड़ो गाड़ि को पेरे:आ काना	(कि) आदमी और बन्दर भर गए हैं
सीता साति देवी इदिको हिआकाना।	जो सीता सती को ले जाने के लिए आए हैं

राङ :–

काली देवी सतेआ जाना	देवी काली सत्य निकली
इनाते को हिआ काना	इसीलिए वे आए हैं
आहो हुनडिनपे सोबेन होन हागा	सभी भाई–बन्धु जमा हो जाओ
आहो जोम कोआबु होड़ो गाड़ि सोबेनतेगे।	हम सब मिलकर आदमी और बन्दर को खाएँगे

पायार :–

मेघनाथ माएसासुर	मेघनाथ महिषासुर
ओड़ो: जोतो बीर आसुर	और सभी राक्षस वीर
नुतुम नुतुम बीर को हुनडिनजान	नामी नामी वीर जमा हो गए
लेलताना को सामा रे	वे सभा का दृश्य देख रहे हैं
अंगाद बीर तालारे	अंगद वीर बीच में (बैठे) हैं
लाङकापाति दुबाकाना पांति रे।	और लंकापति उसके पास में बैठा है

राङ :–

ओकोए हेके मेनते	यह बंदर कौन है कहकर
काजितानाको हे मेनते	(लोग) फुसफुसाकर पूछ रहे हैं
ओकोरेनि: ओकोए हेके कोते हिआकाना	कहाँ से आया है, कहाँ आया है
ओकोए हेके लाङकापाति पानतिरे दुबाकाना।	कौन हे जो लंकापति की पांति में बैठा है।

पायार :–

अंगाद बीरे: बिरिद जाना	अंगद वीर उठा
बिरिद केआते काजि ताना	और उठकर कहने लगा—
ने साभारेन जोतो को आयोमेपे	इस सभा के सभी लोग सुने
सोबेन बीर आसुर को	हे वीर राक्षसों
आञा: काटा ती को	तुम मेरे हाथ पैर
दिसुम आतोमते तुल गिड़ि तापे।	इस देश में बाहर फेंक दो

राङ :–

बुदु बाबु काजिताना	बुदु बाबू कहते हैं—
जूइआ बिरिद पे	(राक्षसो) जाओ उठो
निआरेगे लेलो:आ पेड़े: तापे	इसी में तुम्हारी शक्ति दिखाई देगी
बोदे जूइआ बिरिद पे।	जाओ जल्दी उठो

☆☆☆

15. सोबेन बीर को हुंडिन जाना — सभी बीर जमा हुए

सोबेन बीर को हुंडिन जाना	सभी वीर जमा हो गए
आको आकोते को कापाजि ताना	वे आपस में बातचीत कर रहे हैं
गाड़ि काटा लेल मेद रे	बन्दर के पैर को देखते हुए
चिका लेका साबेआबु साभा रे	हम सभा में किस तरह पकड़ेंगे
गाड़ि काटा लेल मेद रे।	बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे)
रावान राजा गोमके ताबु	रावण राजा जो हमारा स्वामी है
निआ काजि कुलिआबु	उससे हम यह बात पूछेंगे—
गाड़ि काटा लेल मेद रे	बन्दर के पैर को देखते हुए,
आञ दो काञा: लानदाञा को साभा रे	मैं नहीं छूता, सभा में हँसी होगी
गाड़ि काटा लेलमेद रे।	बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे)
जा: लेरे गाड़ि जाति	बन्दर के पैर को (जानते हुए) यदि पकड़ेंगे
सेनो:आ ताबु जाति पाति	तो हमारी जाति नष्ट हो जाएंगी
गाड़ि काटा लेल मेद रे	बन्दर के पैर को देखते हुए यदि पकड़ें
काको दुब जाति कुपुल पानति रे	तो जाति वाले साथ नहीं बैठेंगे
गाड़ि काटा लेल मेद रे।	बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे)
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं
काजि ताबु हेके इना	(कि) बात तो यही है
गाड़ि काटा लेल मेदरे	बन्दर के पैर को देखते हुए
बिचारेमे मोड़ें होड़ो मोनेरे	पाँच आदमी मिलकर मन में विचार करो
गाड़ि काटा लेल मेद रे	बन्दर के पैर को देखते हुए (कैसे पकड़ेंगे)

☆☆☆

पयारा:-

16. रावान राजाए: माया केन — रावण राजा ने माया फैलाई

रावान राजाए: मायाकेन	रावण राजा ने माया फैलाई
रावन तेको पेरे:आ काना	(लगा कि) सारी लंका रावण से ही भरी हुई है
अंगाद बीर मोनरे: विचार तान	वीर अङ्गद मन में सोच रहा है
आए: हेके मायाधर	(कि) यह मायावी है
इतुआनको देसानतार	(जिसे) दुनिया जानती है
उपुन वेद रे इनाके ओलाकान।	(इसीके बारे में) चारो वेदों में लिखा हुआ है

राङ :-

अंगाद बीरे: काजि ताना	अंगद कहता है
इसु रावनेञ लेल ताना	कि मैं बहुत से रावण देख रहा हूँ
लेलतेञ दानदा जान	देखकर मैं आश्चर्य में पड़ा हूँ
ओकोए हेके आमा: आबा लाङका महाराज	तुम्हारे पिता लंका महाराज कौन हैं?
बाबु आहो दुबुराज।	हे बाबू दुबराज (मुझे बता दो)
मनदोदरी: आड़ांनदि केना	(जिसने) मन्दोदरी से शादी की है
आए:गेञ नाम ताना	मैं उसी को ढूँढ़ रहा हूँ
ओको साइ रे: दुबाकान	वह किधर बैठा है
जोतो रावानेञ लेलतान हेनदे हेनदे साआज	मैं सभी रावणों को काले पहरावे में देख रहा हूँ
बाबु आहो दुबुराज।	हे बाबू दुबराज (मुझे बता दो)
नेका मेनते काञ ठोओराना	मैं यह रहस्य नहीं जनाता
मोयोद रावानेञ इतुआना	मैं तो एक ही रावण को जानता हूँ
वेद रे ओलाकाना	(जिसके बारे में) वेद में लिखा है
ओकोतेको हिआकाना चिकान कामिकाज	(इतने रावण) कहां से आए हैं? क्या नाम है?
बाबु आहो दुबुराज।	हे बाबू दुबराज (मुझे बता दो)
मोयोद एंगा आनेक आपु	एक माँ और अनेक पिताओं को
आञदोञ लेलतान	मैं यहाँ देख रहा हूँ
बुदु बाबु काजि ताना	बुदु बाबू कहते हैं कि
चिका लेका सुसार ताना निमिनाङ धिराज	एक रानी इतने राजाओं की सेवा कैसे करती
बाबु आहो दुबुराज।	हे बाबू दुबराज (मुझे बता दो)

☆☆☆

17. रावान राजाए: हुकुम केना — रावण राजा ने हुक्म दिया

रावन राजाए: हुकुम केना	रावण ने आज्ञा दी
मेघनाथ बीर बिरिद जाना	(तब) मेघनाथ वीर उठ खड़ा हुआ
काटा तुला काको दाड़ि जान	(लेकिन) कोई भी (अंगद का) पैर नहीं उठा सका
गिउ: तेको हेनदे गिड़ि जाना	सभी का चेहरा लाज से काला पड़ गया
काटा तुल काको दाड़ि जाना।	कोई भी पैर नहीं उठा सका
सोबेन बीर को तुलकेना	प्रत्येक वीर ने (उठाने की) कोशिश की
जेताए काको दाड़िजाना	लेकिन कोई भी समर्थ नहीं हुआ
काटा तुल काको दाड़ि जान	कोई भी पैर नहीं उठा सका
सोबेन बीर को गोसो गिड़ि जान	सभी वीर बिल्कुल मुर्झा गए
काटा तुल काको दाड़ि जाना।	कोई भी पैर नहीं उठा सका
लाङका पाति लेल ताना	लंकापति यह देख रहा है
मोनेरे: बिचार ताना	(और) मन में सोच रहा है
काटा तुल काको दाड़ि जान	(कि) कोई भी पैर नहीं उठा सका
मोने रे अंगाद लानदा तान	अंगद मन में हंस रहा है
काटा तुल काको दाड़ि जाना	कोई भी पैर नहीं उठा सका
सोबेन बीर को चाबा जाना	सारे वीर समाप्त हो गए
लाङका पाति बिरिद जाना	(तब) लंकापति स्वयं उठ खड़ा हुआ
काटा तुल काको दाड़ि जाना	कोई भी पैर नहीं उठा सका
बुदु बाबु दुराङ बाइतान	बुदु बाबू गीत बना रहे हैं
काटा तुल काको दाड़ि जाना।	(कि) कोई भी पैर नहीं उठा सका

☆☆☆

18. रावान राजाए: काजिताना — रावण राजा कहते हैं

रावान राजाए: काजिताना	रावण राजा कह रहा है
आञ ओकोए काए: ठोओराना	(कि अंगद) यह नहीं जानता कि मैं कौन हूँ
इनाते आनाए: काजितान	इसलिए ऐसा कह रहा है
बिरिदमे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, उठो
साबि: मे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो
हुराङ गिड़ि ताइमे	(और) उठाकर फेंक दो
गाड़ि बीरे: बाइआकान।	बन्दर वीर बनने चला है
आए: हेके गाड़ि जाति	यह तो बन्दर जाति का है
बानो: ताको जाति पाति	इनकी जाति पाति का ठिकाना नहीं है
हातुरे जोतोको सुसुनतान	ये गाँव-गाँव नाचते रहते हैं
बिरिदमे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, उठो
साबि:मे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो
हुराङ गिड़ि ताइमे	(और) उठाकर फेंक दो
गाड़ि बीरे: बाइआकान।	बन्दर वीर बनने चला है
ओड़ा: दुआर काको बाइआना	ये घर द्वार तो बनाते नहीं
बिर बिर को होनोर ताना	जंगल-जंगल घुमा करते हैं
दारु रे को चाङकि बाड़ान तान	पेड़ पर उछलते कूदते रहते हैं
बिरिद मे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, उठो
साबि: मे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो
हुराङ गिड़ि ताइमे	(और) उठाकर फेंक दो
गाड़ि बीरे: बाइआकान।	बन्दर वीर बनने चला है
हाटिङि आबु ओड़ा: ओड़ा:	हम इसे घर पर बाटेंगे
जोमिआबु होन गाड़ां	(और) सभी मिलकर खाएंगे
बुदु बाबु निआ गे: काजिताना	बुदु बाबू यही कहते हैं
बिरिद में गा मेघनाथ	(कि) हे मेघनाथ, उठो
साबि: मे गा मेघनाथ	हे मेघनाथ, इसे पकड़ लो
हुराङ गिड़ि ताइमे	(और) उठाकर फेंक दो
गाड़ि बीरे: बाइआकान।	बन्दर बीर बनने चला है

☆☆☆

19. अंगाद बीरेः ताउलि केन — बीर अंगद ने ताल ठोंका

अंगाद बीरेः ताउलि केना	वीर अंगद ने ताल ठोका
रावान राजाएः तुमबिदजाना	रावण राजा मुँह के बल गिर पड़ा
बोओः रे मुकुट तालारे गिड़िजाना	(और) सिर के मुकुट जमीन पर बिखर गई
अंगाद बीर हालाङ हालाङ हुराङ गिड़ितान	बीर अंगद उन्हें उठा-उठाकर फेंक रहा है
राम दाल बीर को लेल तान।	राम दल के वीर यह देख रहे हैं
होयो लेका साड़िताना	वे मुकुट की तरह बह रहे हैं
बिजिर-बिजिर जुलतान	(और) झिलमिल झिलमिल चमक रहे हैं
राम सभा ताला रेः उयुःजान	वे राम की सभा में गिरे
चिआः चिकानाः हेके मेनते काजितान	(लोग) कहने लगे, कौन सी चीज है
लेलते बीर को दानदा जाना।	वीर देखकर चकित होने लगे
सोबेन बीर को भाकुआओ जाना	(जब) सभी वीर आश्चर्य में पड़े
विभिसानेः काजि ताना	(तब) बिभीषण कह रहे हैं
निआ काजि आञदोञ इतुआन	मैं यह रहस्य जानता हूँ
रावान राजा अंगाद बीर लोः आनरे लाड़ाइन	कि अंगद वहां रावण से लड़ रहा है
टुपि नेरे उयुः जान।	(और) उसकी टोपी यहां गिरी
सोबेन बीर को लेल ताना	सभी वीर यह देख रहे हैं
एन सोमाए रेः सेटेर जान	उसी समय वह (अंगद) वहाँ पहुँचा
अंगाद बीर राम होएः जोआरतान	वीर अंगद राम के प्रणाम कर रहा है
आनरेआः समाचार को जोतोएः काजितान	और वहाँ का सारा समाचार कह रहा है
बुदु बाबु दुराङ तान।	बुदु बाबू यही गीत गा रहा है

☆☆☆

उल्लेखनीय सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियां

आदिवासी सांस्कृतिक पहचान प्रतिबिंबन–

- राँची विश्वविद्यालयी दिनों में ही वृहत्तर झारखण्ड क्षेत्रीय आदिवासी सरहुल महोत्सव के रूप में राँची में एक विशाल शोभायात्रा की परम्परा प्रारंभ करने में प्रमुख भूमिका। इस महोत्सव ने कालक्रम में पिछले 50 वर्षों में एक क्षेत्रीय विकेन्द्रिय रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप चैत्र का पूरा महीना ही महोत्सवमय हो जाता है।
- विदेश (अमेरिका–यूरोप) प्रवास के 18 वर्षों (1963–81) के दौरान भाषाविज्ञान और भारत विद्या के अध्ययन–अध्यापन के क्रम में साउथ एशिया फोक पर्फोमर्स के 25 सदस्यीय दल के नेतृत्वकारी टीम सदस्य के रूप में मध्यअमेरिका प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय नृत्यसंगीत आयोजनों में सफल सहभागिता।
- स्वदेश वापस आने के बाद राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के साथ आदिवासी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रारंभ। साथ ही पूर्व एशिया (ताइपेई, जापान) एवं दखिण–पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, फिलीपीन) में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजनों में झारखण्डी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुति।
- झारखण्ड विषयक समिति, भारत सरकार (1989–2000) में सक्रिय सदस्यता एवं उल्लेखनीय भूमिका, जिसके फलस्वरूप झारखण्ड राज्य गठन।
- विश्व सामाजिक मंच (World Social Forum) मुंबई (2004) एवं दिल्ली (2007) सत्रों में सर्वोत्तम भागीदारी।
- डोम्बारी पहाड़ (जिला–खूंटी, झारखण्ड) पर जनसहयोग एवं सरकारी विभागों के समन्वय से आदिवासी महानायक, बिरसा मुण्डा की विशालकाय (18′) प्रतिमा एवं, 80′ शहीद स्तंभ खड़ा करने में अग्रणी भूमिका निर्वहन।
- झारखण्ड सांस्कृतिक क्षेत्र में यहां की लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए अखरा (ग्राम सांस्कृतिक केन्द्र) के पुनर्जागरण एवं विस्तार–प्रसार को एक अभियान का रूप देने में उल्लेखनीय भूमिका निर्वहन। इस चेष्टा की मान्यता स्वरूप 2008 में संगीत–नाटक अकादमी द्वारा भारत के राष्ट्रपति के करकमलों से पुरस्कृत।
- सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से मिलकर जनविकास के अनेक कार्यक्रमों में सफल सहभागिता, विशेषकर वन विस्तार एवं संरक्षण के क्षेत्र में।
- राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी जनहित अधिनियमों के प्रारूप निर्माण कार्य में सक्रिया भूमिका, विशेषकर ग्राम स्वशासन (PESA) आदिवासी नीति एवं वन नीति–नियम निर्माण में।
- प्रकृति और मनुष्य के पारम्परिक सम्पोषण (Symbiotic) संबंध को बनाए रखने की चेष्टा के एक आस्थागत अभियान का रूप आदिधर्म को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना को समर्पित एवं देश की आदिवासी आबादी के लिए 'आदिधर्म' की प्रस्तावना।
- देश के आदिवासी क्षेत्रों में फैलते हुए उग्रवाद पर चिंतित एवं इसके पीछे की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की चेष्टा में संलग्न।

Travels : North America, Europe, Asia-Pacific

Contact : Sarnatoil-Hatma, Behind Ranchi College, Ranchi-834008, Jharkhand.
Email : rdmunda@yahoo.co.uk • **Cell Phone:** 9431938180 **Home:** 0651-2233090